Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नचिकेता

रेत में खोई नदी

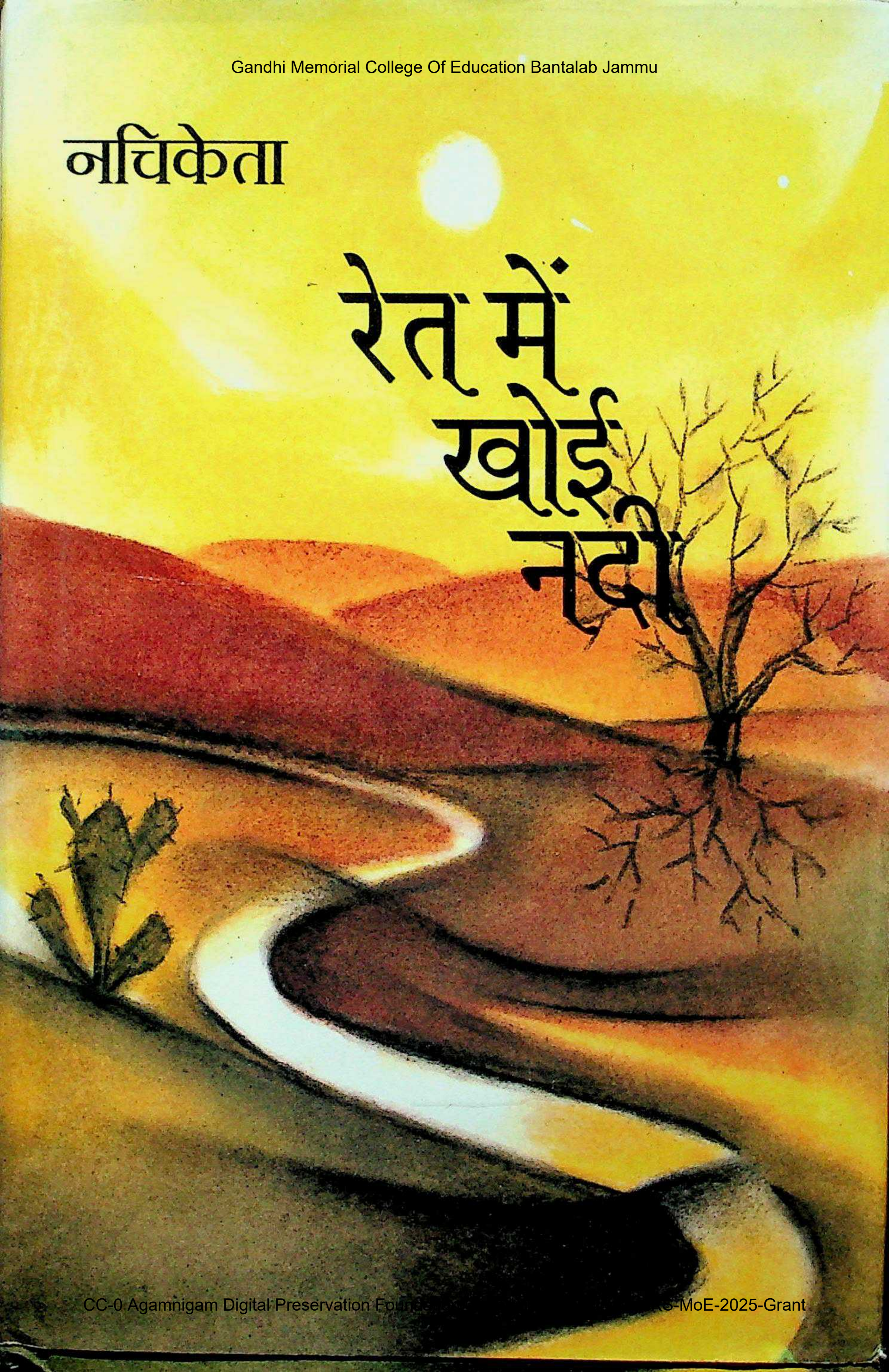

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foun... S-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नचिकेता समकालीन हिन्दी गीत के अप्रतिम हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने नवगीत की वैचारिक अन्तर्वस्तु में अन्तर्हित मध्यवर्गीय ढुलमुलपन और निराशाबोध, उनके अमूर्त्त भाव-लोक एवं पतनशील जीवन-मूल्यों से सार्थक विच्छेद कर जनगीत-रचना की उर्वर जमीन तैयार की है, साथ ही अपनी बहुआयामी रचनात्मक पहलकदमी की बदौलत गीत-रचना का नया सौन्दर्य-शास्त्र रचा है। नचिकेता, शायद हिन्दी गीत के अकेले रचनाकार हैं, जिनकी विविधताओं से भरी रचनात्मक दुनिया की अन्तर्यात्रा करके उनके समय और समाज का मुकम्मल इतिहास लिखा जा सकता है।

दरअसल, नचिकेता आज के अत्यन्त ही संश्लिष्ट जीवनानुभवों की सम्पूर्ण जटिलता को समग्रता में व्यक्त करने के लिए अपने गीतों की प्रभावी अन्तर्वस्तु, रूपाकार, भाषा, शिल्प, कहन-शैली, लय-छन्द आदि को और अधिक जटिल बनाकर प्रस्तुत करने की बजाय जटिल-से-जटिल अनुभूतियों को अपने में समेटकर बिलकुल ही सहज बनाकर प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनके गीतों की भाषिक-संरचना बिलकुल ही सहज, अनुभूति की संरचना पारदर्शी और अनुभव-जगत् का पाट अत्यधिक चौड़ा दृष्टिगत होता है। उनके गीतों की बनावट और बुनावट नितान्त सहज दृष्टिगोचर होने के बावजूद काफी कलात्मक है। उनके ऐन्द्रिक बिम्ब अनायास पाठकों की संवेदना के साथ सहज और आत्मीय तादात्म्य एवं संवाद स्थापित कर लेने में सक्षम हैं।

नचिकेता, मूलतः किसान-चेतना के कवि हैं। इसलिए उनके गीतों में प्रेम, प्रकृति और सौन्दर्य की आत्मपरक अनुभूतियाँ भी उनकी ग्राम्य-चेतना में इस कदर घुल-मिलकर व्यक्त हुई हैं कि उन्हें अलग-अलग देखना सहज कर्म नहीं लगता। असल में, उनकी विचारधारा उनकी मूल्य-दृष्टि में अन्तर्निहित है। उनकी मातृभाषा 'मगही' के सैंकड़ों शब्द उनके गीतों में अपनी सम्पूर्ण सांस्कृतिक अस्मिता और परिवेश के साथ एकाकार हो गए हैं। ये अपरिचित शब्द भी उनके गीतों के अर्थ-निर्माण की प्रक्रिया को शिथिल नहीं करते, वरन् उनका उत्सेधन करते हैं। यह सच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रेत में खोई नदी

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Poetry

रेत में खोई नदी

नचिकेता

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No.....5164.....
Dated.....28/12/23

अक्षरा फाउण्डेशन
सोराब हाउस, कोलाबा कॉज़वे
मुम्बई, द्वारा प्रदत्त
उपहार

सारांश प्रकाशन
दिल्ली-हैदराबाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूल्य : रु. 250.00
पहला संस्करण : 2009
© नचिकेता
प्रकाशक : सारांश प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
प्रधान कार्यालय : 196-सी, पाकेट-4,
मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091
टेलीफैक्स : 91-11-43026253
ई-मेल : eprakashansaransh@yahoo.co.in
शाखा कार्यालय : 17 अमृता मॉल, प्रथम तल
6-3-1110, बेगमपेट, हैदराबाद-500016
फोन : 91-40-66516611 फैक्स : 91-40-23416640
कलापक्ष : सुनिल विश्वकर्मा
मुद्रक : राजधानी प्रिंटर्स, 4187, गली शहतारा,
अजमेरी गेट, दिल्ली-110006

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अग्रज
ओम प्रभाकर
नईम
सत्यनारायण
कुमार रवींद्र
रामकुमार कृषक
प्रेमशंकर रघुवंशी
और
अश्वघोष
को

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साधारण लोगों के असाधारण गीत

गीत मनुष्य की आदिम आत्माभिव्यक्ति का साधन है। सभ्यता के विकास के साथ-साथ इसका स्वरूप भी बदलता रहा है, किन्तु इसके मूल में भावप्रवणता और लयात्मकता विद्यमान रही है। प्रत्येक युग के अनुरूप गीत जीवन के हर्ष-विषाद की तीव्र अनुभूतियों की अभिव्यक्ति करता रहा है। वैदिक युग में जहाँ देवता (उषा, अग्नि, मरुत् आदि) इसके प्रेरक रहे हैं, वहीं बौद्ध-काल में करुणा एवं प्रेम के स्वर को प्रधानता मिली है। छायावादी गीतों में रोमानियत एवं वायवीय कल्पना की उड़ान थी। जीवन के यथार्थ से वह कटा हुआ था। स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद गीत क्या साहित्य की अन्य विधाओं में भी परिवर्तन हुआ। अब गीत कमनीय कल्पना की भित्ति पर अवलम्बित न होकर सीधे जीवन-यथार्थ की अभिव्यक्ति का साधन था। पारम्परिक मूल्य टूट रहे थे और उन मूल्यों का खोखलापन भी स्पष्ट हो चुका था। परिणाम यह हुआ कि लोगों के मन में उन मूल्यों के प्रति अनास्था, अनिर्णय एवं अविश्वास की स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। अनिर्णय से तात्पर्य यह है कि परिवर्तन की आकांक्षा तो थी, किन्तु उसकी रूपरेखा का ज्ञान न था। इन्हीं दिनों अतिमानव के प्रतिपक्ष में लघुमानव 'की प्रतिष्ठा हुई और विजयदेव नारायण साही जैसे आलोचकों ने इसकी वकालत लम्बे समय तक की। यह नयी कविता का समय था। नचिकेता के शब्दों में, "पिछले दिनों हिन्दी कविता तें लघुमानवों का बोलबाला था। कुण्ठा, संत्रास, घुटन, ऊब, परायापन, अजनबीपन, सम्बन्ध-विघटन, व्यर्थताबोध, अनास्था, महानगरीय जीवन और औद्योगिक सभ्यता की यांत्रिकता आदि पतनशील जीवन-मूल्यों का त्रास झेलना उनकी नियति थी। उन्हें न तो अतीत से लगाव था, न भविष्य की चिन्ता। इनका सरोकार केवल वर्तमान से, सम्पूर्ण वर्तमान से भी नहीं, उसके छोटे काल-खण्ड से था। जाहिर है कि उनके पास न अतीत का गौरव था, न ऐतिहासिक विकास-क्रम और न विरासत की ही परवाह थी। न यथास्थिति को तोड़ने का दृढ़ संकल्प

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

था, न सामाजिक शोषण, दमन व उत्पीड़न के खिलाफ दीर्घकालीन जेहाद छेड़ने का अदम्य साहस था। इन व्यक्तिवादी पैंतरेबाजियों की जड़ में पूँजीवादी जीवन-मूल्यों का जहर अंतर्भूत था और अपने वजूद की हिफाजत ही उनका मुख्य मकसद था। परिणामत: उनका सारा ताम-झाम अपनी अस्मिता की रक्षा तक सीमित था, क्योंकि पूँजीवादी सामाजिक प्रणाली में हर व्यक्ति दूसरे को मनुष्य नहीं, पण्य-वस्तु समझता है, जिसका वह क्रय-विक्रय कर सकता है। इससे सारी मानवीय गरिमा और सामाजिक सम्बन्ध लुप्त होकर व्यक्ति-केन्द्रित हो जाते हैं। इन्हीं कारणों से इस दौर का अधिकांश साहित्य व्यक्तिवादी रुझानों और जनविरोधी चेतना का जखीरा भर था।" (गीत-रचना की नयी जमीन, पृष्ठ-53) ऐसे ही वातावरण में नवगीत का उदय हुआ। नवगीत में आंचलिकता का स्वर प्रमुख था। यह आंचलिकता आधुनिकता की देन थी। छायावादोत्तर गीतों में सरलीकरण की प्रवृत्ति बढ़ी थी, जिससे मुक्त होने के लिए नवगीतकार लोकप्रचलित गीतधारा में प्रवृत्त हुए, जहाँ उन्हें भावानुकूल भाषा एव छंद-विधान का उत्स प्राप्त हुआ। प्रारम्भ में नवगीत का तेवर आक्रामक था।

वैसे तो गीत का स्वरूप वर्ष 1950 से ही बदलने लगा था, किन्तु वर्ष 1957 में श्रीकान्त वर्मा ने 'कृति' के माध्यम से 'नवलेखन' की घोषणा की थी, जिससे प्रभावित होकर वर्ष 1958 में 'गीतांगिनी' के सम्पादन-क्रम में गीत के रचना-परिदृश्य पर आ रही तब्दीली को राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने 'नवगीत' नाम दिया। इस दौर के गीतकारों में राजेन्द्र प्रसाद सिंह, केदारनाथ सिंह, ठाकुर प्रसाद सिंह, शंभुनाथ सिंह, चन्द्रदेव सिंह, वीरेन्द्र मिश्र, रामदरश मिश्र आदि प्रमुख थे। दूसरे चरण में ओम प्रभाकर, नईम, उमाकान्त मालवीय, देवेन्द्र कुमार, माहेश्वर तिवारी, हरीश भदानी आदि नवगीतकार प्रकाश में आये। इन रचनाकारों के गीतों में जन-संघर्ष की चेतना का स्पर्श भी कहीं-कहीं मिलता है, किन्तु यह उनका प्रमुख स्वर नहीं था। इसका एक बहुत बड़ा कारण यह था कि उसके मूल में आधुनिकतावाद था, जो जन-विरोधी चेतना है। जार्ज लुकाच का मानना है कि "मनुष्य उसके लिए सामाजिक प्राणी न होकर एक खण्डित, एकाकी, निरीह व्यक्ति मात्र है, जिसका कोई अतीत, वर्तमान और भविष्य नहीं है। इतिहास-शून्य निरीह मानव ही आधुनिकताबोध के केन्द्र में अवस्थित है।"

नवगीत रूपवादी कलावाद का शिकार है जिससे जीवन के वर्तमान यथार्थ का कोई सम्बन्ध नहीं। वर्ष 1958-60 से लेकर आज तक उसकी विषय-वस्तु एवं सामाजिक यथार्थ लगभग समान हैं। बदलाव बहुत ही कम दृष्टिगोचर होता है। इससे उनकी वैचारिक जड़ता एवं विभ्रम का पता चलता है। ऐसे में गीतकारों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

को एक ऐसी जमीन की तलाश थी, जहाँ से उन्हें जीवन-यथार्थ की समस्याओं से टकराने की शक्ति मिले। उन्होंने नवगीत से अपना पिण्ड छुड़ाया और जन-पक्षधरता को स्वीकार किया। यह कोई फैशन न होकर एक जीवन-दर्शन था, जिसके पास अपना वैश्विक दृष्टिकोण था। गीत की यह धारा 'जनगीत' के रूप में जानी जाती है। नचिकेता इस धारा के प्रतिनिधि कवि हैं। इन्होंने सौन्दर्य के पारम्परिक प्रतिमानों को तोड़ते हुए न केवल श्रम-सौन्दर्य की प्रतिष्ठा की है, वरन् जनवाद को वैचारिक विस्तृति भी प्रदान की है। अपने गीतों में भूख, बेरोजगारी, अशिक्षा, आतंकवाद, बाजारवाद, भूमण्डलीकरण के साथ-साथ प्रेम, रिश्ता, जीवन की सहजता एवं उस सहजता के प्रतिरोधी स्वर एव परिस्थितियों पर भी वह अपना ध्यान केन्द्रित करते हैं। ऐसा लगता है कि वर्षों पूर्व मैनेजर पाण्डेय द्वारा लगाये गये आरोप का सशक्त प्रत्युत्तर नचिकेता अपने गीतों में देते हैं। मैनेजर पाण्डेय का आरोप था कि "नचिकेता के गीतों में एक ऐसे जन की तस्वीर उभरती है, जिसकी अँतड़ियाँ भूख से ऐंठ रही हैं, खून खौल रहा है, आँखें लाल हैं और वह कसी हुई मुट्ठी ताने सत्ता को ललकार रहा है। सवाल है कि सामान्य जन अपने जीवन में केवल यही है या और भी कुछ है। क्या उसका केवल यही रूप सच है या कोई और भी रूप है। क्या कभी उसकी आँखें भींगती भी हैं, होंठों पर हँसी आती है, वह सहज होता है, वह अपने घर-परिवार और संसार से प्यार भी करता है या नहीं? क्या उसका यह दूसरा सन्दर्भ गीत का विषय नहीं है? जन-जीवन के इस दूसरे रूप की उपेक्षा के कारण नचिकेता के गीतों में संवेदना की सीमा बहुत संकुचित हो गयी है।" (शिनाख्त, पृष्ठ- 61) यदि पाण्डेय जी 'लिक्खेंगे इतिहास' के बाद के 'बाईस्कोप के गीत', 'सोये पलाश दहकेंगे', 'रंग न खोने दें', 'रंग मैले नहीं होंगे', 'कोई क्षमा नहीं', 'मकरचाँदनी का उजास', 'पर्दा अभी उठेगा', ' जेठ में मधुमास' आदि गीत-संग्रहों को देखें, तो नचिकेता के गीतों में संवेदना की विस्तृति का सहज ही आभास हो जायेगा। जहाँ तक 'लिक्खेंगे इतिहीस' का प्रश्न है, उसकी रचना नचिकेता के ही अनुसार एक विशेष राजनीतिक प्रतिबद्धता, सामाजिक वातावरण एवं परिस्थितियों की उपज है। जन-मुक्ति के आन्दोलन के लिए संघर्षशील व्यक्तियों को आतंकवादी कहकर प्रशासन द्वारा उनकी निर्मम हत्या के प्रतिरोध में आक्रोश की ज्वाला नहीं धधकेगी तो क्या प्यार उमड़ेगा।

'रेत में खोई नदी' के गीतों का संसार आम जन-जीवन एवं जीवनानुभूति का संसार है। आजकल यह कहने का फैशन हो गया है कि " मैं किसी विचारधारा विशेष के प्रति प्रतिबद्ध नहीं हूँ और सभी प्रकार के विचारों को स्वीकार करता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हूँ।" भिन्न-भिन्न विचारधाराओं से अच्छी चीजें ग्रहण करना अलग बात है, किन्तु वैचारिक प्रतिबद्धता का अभाव अत्यन्त चिन्त्य है। ऐसा कहनेवाले वास्तव में विचारधारा को बाह्यारोपित मानते हैं, जबकि ऐसा है नहीं। विचारधारा व्यक्ति के इन्द्रियबोध से लेकर सौन्दर्यबोध तक अनुप्राणित रहती है। जिस व्यक्ति की कोई विचारधारा नहीं, उसके अस्तित्व के बारे में भी क्या कहा जाय। अतएव प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति के लिए वैचारिक प्रतिबद्धता आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। नचिकेता का जुड़ाव गरीब, मजदूर एवं किसान वर्ग से बहुत गहरे तक होने के कारण उनके जीवन की समस्याओं एवं दुर्दशा की उन्हें बड़ी स्पष्ट पहचान है। रात-दिन परिश्रम कर सबकी क्षुधापूर्ति के साधन जुटानेवाला किसान स्वयं अपने जीवनयापन के आवश्यक साधन नहीं जुटा पाता। तात्कालिक संकट का सामना तो उसे करना ही पड़ता है, उसका भविष्य भी निविड़ अंधकार में है। अतएव उसकी आँखों में स्वप्न की जगह निराशा है और पुतली पर काँटों का निचाट जंगल- "आँखों की पुतली पर पसरे हैं/ निचाट काँटों के जंगल/ दूधभरी धानों की बाली के ऊपर/ है लिखा अमंगल / आनेवाला समय हुआ है काला/ पीकर नीली स्याही"।

'रेत में खोई नदी', वस्तुत:, नचिकेता के विविध प्रकार के जीवनानुभवों से संवलित गीतों का नवीन संकलन है। सरल एवं सहज भाषा में जटिल-से-जटिल अनुभूतियों की सशक्त अभिव्यक्ति इन गीतों की बहुत बड़ी विशेषता है। मूलत: और अन्तत: जनवादी गीतकार होने के कारण उनके गीतों में जनता की भूख, विपन्नताा, छद्म-लोकतंत्र और अपराध-तंत्र के प्रतिरोध का स्वर सशक्त एवं तीक्ष्ण है। सौन्दर्य के पारम्परिक प्रतिमानों को तोड़ते हुए श्रम-सौन्दर्य की प्रतिष्ठा करनेवाले नचिकेता अन्य जनवादी रचनाकारों से इस अर्थ में भी भिन्न हैं कि उन्होंने जनवाद को वैचारिक विस्तार दिया है। जीवन के सर्वांगीण पक्ष को अपनी रचना का आधार बनानेवाले नचिकेता अपने गीतों में न केवल भूख, विपन्नता, बेरोजगारी, बदहाली, शोषण, दमन और उत्पीड़न को ही अभिव्यक्त करते हैं, प्रेम, प्रकृति और सौन्दर्य की ताजगी और सादगी को भी उसकी पूरी अस्मिता के साथ अभिव्यक्त करते हैं। प्रेम, प्रकृति और सौंदर्य, दरअसल, उनकी मूल्य-दृष्टि में समाहित हैं। प्राकृतिक दोहन के परिणामस्वरूप आसन्न संकट के प्रति भी उनके गीतों में गहरी चिंता व्यक्त की गयी है। पेशे से यांत्रिक अभियंता होने के कारण उनके गीतों में व्यवस्थित क्रम (सिस्टम) है, गीत के विभिन्न बंदों में अर्थ की दृष्टि से संतुलन और अन्विति है, जिसका अभाव उनके अधिकांश पूर्ववर्त्ती एवं परवर्त्ती गीतकारों में प्राय: देखा जा सकता है। उनके गीतों में कला की गहरी पहचान के साथ-साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोक-संस्कृति की अनन्य संपृक्ति देख कर अत्यन्त सुखद आश्चर्य होता है। जीवन की गहन-से-गहन अनुभूतियों, जटिल-से-जटिल संवेदनाओं और विषम-से-विषम परिस्थितियों को बिलकुल सहज, किन्तु कलात्मक ढंग से व्यक्त कर देना कोई साधारण कला नहीं है। नचिकेता, वास्तव में, अति साधारण लोगों के असाधारण गीतकार हैं। नचिकेता के गीतों के छन्द-विन्यास, लय-संघटन, बिम्ब, प्रतीक, शब्द और मुहावरे में आम बोल-चाल की भाषा और लोकगीतों की लय-धुनों और लोक-प्रचलित छन्दों का बेहद संतुलित और कलात्मक इस्तेमाल होता है। 'बाईस्कोप के गीत', 'लोकतंत्र की नीलामी', 'भजन', 'निर्गुन', 'पद' आदि में ऐसे ही लोक-छन्द हैं, जिनका कलात्मक उपयोग नचिकेता ने सार्थक ढंग से किया है।

व्यंजना कविता की सबसे बड़ी शक्ति है। जिस कविता में व्यंजना की क्षमता एवं कथन का वैचित्र्य जितना अधिक होगा, कविता उतनी ही उत्तम, अर्थपूर्ण और प्रभावशाली होगी। अभिधात्मक कथन भी किसी विशेष या अनेक प्रसंगों से जुड़कर कभी-कभी हृदय पर गंभीर छाप छोड़ते हैं। शास्त्रीय दृष्टि से भले ही उसे दोयम दर्जे की रचना कहें, व्यावहारिक रूप से उसका भी गहरा प्रभाव देखा जा सकता है। यही कारण है कि बहुत से नारे कविता से अधिक चर्चित, प्रभावशाली और दीर्घजीवी रहे हैं। स्वयं नचिकेता के प्रराम्भिक गीत नारे की तरह जनसंघर्षों में व्यवहृत हुए हैं, आज भी हो रहे हैं।

नचिकेता ने जनवाद के प्रति प्रतिबद्ध होने के कारण अपने गीतों में मुख्य रूप से मनुष्य के द्वारा मनुष्यों के शोषण, दमन और उत्पीड़न की त्रासदी एवं प्रतिरोध को ही अपना विषय बनाया है। शासक, राजसत्ता, राजनेता आदि का जहाँ कहीं भी उल्लेख है, वे उनके प्रतिपक्ष में खड़े हैं। ऐसे स्थलों पर उनके गीतों में व्यंग्य का स्वर अत्यंत तीक्ष्ण है । सड़े-गले धार्मिक विश्वास, निस्सार पारम्परिक रूढ़ियाँ एवं प्रशासकीय छद्मधर्मिता, जिसने वातावरण को विषाक्त तथा दुर्गन्धयुक्त बना दिया है और जिसके फलस्वरूप आमजीवन में घुटन है, के प्रति नचिकेता ने गहरी चिंता व्यक्त की है। ऐसे स्थलों पर गीतकार का आशान्वित चित्त क्रान्ति की संभावना व्यक्त करता है और हालात को बदलने में विश्वास रखता है--" क्यों लगता/ तीखी बदबू है भरी हवाओं में/ आँधी आने की बेचैनी/ बन्द दिशाओं में/ इस अनजान घुटन में/ सूनापन भी दहल गया"(अनजान घुटन)। सूनापन का दहलना एक ओर आतंकित करता है, तो दूसरी ओर जड़ता को तोड़ता हुआ चेतना को क्रियाशील बनाता है। गीतकार अनुभव करता है कि जीवन चतुर्दिक् संकटों से घिरा है, जिससे कष्टमय जीवन और कष्टमय होता जा रहा है। मानों

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तलवे में काँटा चुभकर टूट गया हो और उसकी कसक बेचैन कर रही हो--"घर के बाहर धूल/ धुआँ, बदबू, सन्नाटा है/ कसक रहा तलवे में चुभकर/टूटा काँटा है/ किस जुबान से/ इन दुर्घटनाओं की व्यथा कहूँ/ नीम, निबौरी झरी/ गीत कोयल का मौन हुआ/ क्रुद्ध ततैया जैसा डंक/ मारती है पछुआ/ जहरीली है नदी/ धार में कितनी दूर बहूँ" (दुर्घटनाओं की व्यथा)।

जीवन की सहजता के स्थान पर सबने एक कृत्रिम सहजता धारण कर रखी है। ऐसे में परिस्थितियों को अनुकूल बनाने एवं प्रतिकूल शक्तियों को नष्ट करने या कमजोर बनाने के लिए त्याग का परिचय देना होगा। इतिहास साक्षी है कि किसी भी दुर्व्यवस्था एवं विषम परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए कितना बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा है। निजी सुख-सुविधा एवं आलस को त्यागकर अपने को संघर्ष के लिए तैयार किए बिना परिवर्त्तन असंभव है। यही नहीं, उस विषम परिस्थिति में भी किसी कष्ट का अनुभव किये बिना कार्य करना होगा और उसमें गर्व का अनुभव करना होगा-"जो कुछ भी कहना है, कह लो/ तेजाबों से भरी नदी में/बनकर नाव ताव से टहलो//पिघली/ बर्फ हुई खामोशी/ जो हर घर है/ गयी परोसी/ जितनी/ सहनशक्ति है, सह लो/टूटें उपनिवेश के बंधन/ लौटे गीतों का/ भोलापन/ माचिस की तीली-सा/दह लो"। विषम परिस्थितियों में भी नचिकेता पस्तहिम्मत नहीं होते। उनके गीतों में गहरी जिजीविषा एवं अनवरत संघर्ष की प्रणा की अनुगूँजें अनेक स्थलों पर लक्षित की जा सकती हैं। सुखी होना सुखी होने की योग्यता नहीं हुआ करती। कुछ ठीक वैसे ही जैसे परिश्रम सर्वथा सकारात्मक परिणाम नहीं देता। कई बार योजनाबद्ध ढंग से कार्य करने के बावजूद सफलता नहीं मिलती। ऐसी परिस्थितियों में भी नचिकेता संघर्ष से विमुख नहीं होते और उसे महज दुर्योग मानते हैं। पुनः और शक्ति के साथ संघर्ष को अंगीकार करते हैं, इस विश्वास के साथ कि समस्याएँ हैं, तो समाधान भी हैं-"मिला किसे है सब कुछ पूरा/ रहा न कोई स्वप्न अधूरा/ रेशम नहीं हुआ पटुआ है / है सवाल तो उत्तर भी है/ उठे हाथ में पत्थर भी है/ प्यास लगी तो खुदा कुआँ है"।

प्रत्येक राष्ट्र की अपनी संस्कृति, अपना परिवेश और अपनी कुछ निजी विशेषता होती है। उससे पृथक् होकर वह अपनी पहचान खो देता है। यह ठीक है कि नवीन आविष्कार, वैज्ञानिक अनुसंधान एवं नवीन चिंतन का उपयोग अनुचित नहीं कहा जा सकता। भूमण्डलीकरण के इस युग में समूचा विश्व सिमट गया है, दूरियाँ कम हुई हैं। फलतः इन आविष्कारों और अनुसंधानों का उपयोग देश की सीमा को नहीं स्वीकारता। प्रत्येक बुद्धिजीवी यह कोशिश करता है कि नवीन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिंतन से वह अपने को लैस करे, भले उस चिंतन का विकास किसी दूसरे देश में हुआ हो। इन सबके बावजूद बाह्य तथ्यों को कोई देश अपनी संस्कृति, अपने परिवेश एवं विशिष्ट संरचना के अनुरूप ही ग्रहण करता है। ऐसा करके ही वह विकास की ओर अग्रसर हो पाता है। भारत में न तो अमरीकी पूँजीवाद ठीक अमरीका की तरह लागू हो सकता है और न ही रूसी साम्यवाद ठीक रूस की तरह। दोनों को ही भारतीय संस्कृति एवं परिवेश के अनुकूल होना होगा। इसके अतिरिक्त किसी सिद्धान्त या चिंतन की स्वीकृति में यह ध्यान रखना होता है कि देश उससे किस सीमा तक लाभान्वित हो सकता है। नचिकेता इन्हीं कारणों से पच्छिमी सभ्यता, संस्कृति और चिंतन के अंधानुकरण को प्रकाश न मानकर धुआँ मानते हैं--"धुआँ पच्छिम से/ मँगाकर चाहते हम रोशनी/ भर गयी जिससे शिराओं में/ शिशिर की कनकनी/ कोयले से/ अवाओं को हुई हैरानी बहुत"।

व्यक्ति के जीवन में कुछ सहज-सामान्य इच्छाएँ होती हैं। जीवन की इन इच्छाओं-आकांक्षओ को झुठलाना आत्मप्रवंचना है। नचिकेता अपने गीतों में न केवल उन सहज-सामान्य इच्छाओं की वकालत करते हैं, वरन् उसे बनाये रखने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। यह मनोवैज्ञानिक सत्य है कि प्रवृत्तियों को दबाने से या तो विस्फोट होता है या फिर अनेक प्रकार के मनोविकारों का शिकार होना पड़ता है। दोनों ही स्थितियाँ अस्वास्थ्यकर हैं। अतः अपने गीतों में वे इसका अनुभव बड़ी गंभीरता से करते हैं--"कौन चाहेगा न खिलना/ गुनगुनाना/ सर्दियों में/ तपिस को महसूस करना/तोड़ गहरी नींद की कारा/ उबरना/ उमस में/ ठण्डी हवा का गुद्गुदाना/............./ गर्म साँसों की/ छुअन मीठी परसना/ पुतलियों में स्वप्न की झींसी/ बरसना/ धमस सुनते ही सुबह की/ चहचहाना"।

यह कटु सत्य है कि धर्म के आवरण में एक-से-बढ़कर-एक घृणित व्यापार संपन्न होता है। चूँकि जन-सामान्य प्रवृत्तिमार्गी होता है, अतः समाज की प्रचलित मान्यताओं का ही अनुगमन करता है। भारत एक ऐसा देश है, जहाँ धर्म व्यक्तिगत कम और समाजगत अधिक है। इसका परिणाम यह होता है कि कुछ स्वार्थी तत्त्व जनता की कोमल भावनाओं का उपयोग धर्म की आड़ में अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए करते हैं। धर्म के नाम पर लूट-पाट, हत्या, आतंक एवं वैमनस्य को प्रोत्साहन देना एक घृणित सच है। ये स्वार्थी तत्त्व धर्म की आड़ में न केवल अपने स्वार्थ की सिद्धि करते हैं, अपितु समाज में अपनी विशिष्ट स्थिति बनाये रखने में भी सफल होते हैं। भोली-भाली जनता इस छद्म को पहचान नहीं पाती और शोषण की यह प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। परिणाम यह होता है कि उसका प्राप्तव्य श्रेय (सुख) उसे प्राप्त नहीं होता और तथाकथित धर्मरक्षकों द्वारा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसका आहरण कर लिया जाता है। ऐसे में जनता अपनी बढ़ती हुई आवश्यकता को सीमित करने की चेष्टा करती है--"जिसने हँसिया और/ हथौड़े से अपना जयगान लिखा था/ तनी हथेली की भाषा में पूर्ण मुक्ति-अभियान लिखा था/उनकी बढ़ती गयी/ जरूरत की सूरत पहचान गया हूँ"।

लोगों ने प्राकृतिक सहजता त्यागकर कृत्रिमता धारण कर ली है। तथाकथित शिष्टों की पंक्ति में परिगणित होने के लिए अपनी सहज प्रवृत्तियों का दमन कर वह दिखने की चेष्टा करता है, जो वह वास्तव में नहीं है। अपनी वास्तविकता को ढकने तथा शिष्ट कहलाने की प्रतियोगिता में प्राकृतिक साधनों का दोहन भी लगातार किया जा रहा है। नवीन आविष्कारों से जहाँ सुविधाएँ प्राप्त हुई हैं, वहीं संकट भी उत्पन्न हुआ है। वृक्षों का अविराम गति से कटते जाना, नदियों में अनेक पुल, सड़कों पर दौड़ती गाड़ियों की भीड़, कारखाने से निकलनेवाला धुआँ तथा गंदे पदार्थ आदि सब मिलकर प्रकृति का संतुलन ही तो बिगाड़ रहे हैं। कुल मिलाकर जीवन एक गहरी उदासी में है--"कहो पखेरू/ हर मौसम में तुम क्यों रहे उदास/ खोज सको तो खोजो/ अपनी छीज रही पहचान/ किसने कर ली कैद तुम्हारे/ पर की मुक्त उड़ान/छीनी मीठी चहक/ चुराई नींद, हरी है प्यास/ किसने काटे पेड़/ उजाड़े जंगल, नोचे नीड़/ किसके भय से काँप रहे हैं/ थर-थर साखू, चीड़/ भूल गये/ निर्व्याज दहकना/खुश हो युवा पलाश/ बँधी नदी, हो गयी/ प्रदूषित नदियों की जल-धार/ नींद उड़ाने, लहू चूसने का/ पनपा व्यापार/ अभी मुग्ध है विश्व/ देखकर विश्वग्राम का हास"।

प्रेम व्यक्ति को संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठाता है। एरिक फ्रॉम ने लिखा है कि "अगर मैं किसी एक व्यक्ति से सचमुच प्रेम करता हूँ तो मैं सभी व्यक्तियों से प्रेम करता हूँ, किसी से 'आई लव यू' कहने का सच्चा अर्थ है कि मैं उसके माध्यम से पूरी दुनिया और जिन्दगी से प्रेम करता हूँ"। नचिकेता प्रेम को मानव-जीवन का अनिवार्य तत्त्व मानते हैं। प्रेम एक ऊष्मा है, एक शक्ति है जो व्यक्ति को क्रिया-शील बनाती है। निराशा के क्षणों में प्रेम ही आशा का संचार कर लक्ष्य की ओर उन्मुख करता है। विषम-से-विषम परिस्थितियों में यह व्यक्ति को टूटने नहीं देता। हिंसक होते समय में प्रेम की प्रासंगिकता और भी असंदिग्ध हो जाती है। छल और विश्वासहीनता की बढ़ती हुई प्रवृत्ति ने प्रेम को क्षरित करने का काम किया है। लगता है कि प्रेम कहीं खो गया है-" सोचिए, खोया कहाँ/ वह प्यार का संसार है/ हैं नहीं जंगल घने औ'/दरख्तों की छाँव भी/ चैन से कैसे रहेगा/ यह शहर, यह गाँव भी/जब तपिस का बढ़ रहा/ बेतरह कारोबार है"।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समस्याओं के प्रति उदासीनता बेहद खतरनाक है। इससे विरोधी शक्ति और सशक्त होती है। अत: प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि स्थिति को अनुकूल बनाने की चेष्टा करे। तटस्थता भी एक प्रकार का अपराध है। न्याय का समर्थन न करना प्रकारांतर से अन्याय का ही समर्थन है। इसलिए गीतकार अपनी संकीर्णता से बाहर आने का एवं जागरण का संदेश देता है। कारण कि साम्राज्यवादी-पूँजीवादी शक्तियों ने सबको रौंदने का, नष्ट करने का संकल्प ले लिया है--"रोशनी से/ मिल रहा संदेश/ चौखट लाँघने का/ उठो/ मत सोये रहो/ यह वक्त है खुद/जागने का/ किवाड़ों पर थाप/ देकर अभी गुजरी हैं हवाएँ/ घोंसले में छिपी चिड़ियों ने /सिकोड़े पर फुलाए/ फूल ने खिलकर भरोसा दिया/ तंद्रा त्यागने का/ जिन्दगी की हलचलों में खो गयी पगडण्डियाँ हैं/ बन गया भूलोक जब से/ अमरीका की मण्डियाँ है/ कर लिया संकल्प जिसने/ पृथ्वी को धाँगने का"।

'रेत' और 'नदी' क्रमश:' शोषण और जीवनीशक्ति के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। जैसे रेत जल को सोख लेती है और जल रेत में खो जाता है, वैसे ही शोषकों ने जीवनीशक्ति को सोख लिया है। जल अर्थात् जीवनीशक्ति के शोषण के कारण नदी खो गयी है अर्थात् जीवन खो गया है। ध्यातव्य है कि यह शक्ति खोई हुई है, नष्ट नहीं हुई है, अतएव इसका संधान संभव है-पाणिनि के 'लोप' की तरह, जिसे उन्होंने 'अदर्शन' कहा है। इस संग्रह के गांत जीवन की संधान-यात्रा हैं। इन गीतों के माध्यम से राजसत्ता की स्वेच्छाचारिता, आतंक एवं जनता के बर्बर शोषण का प्रबल प्रतिकार है। इन गीतों में आये बिम्ब, प्रतीक आदि न केवल जनता की दुर्दशा को इंगित करते हैं, वरन् उनमें मानवताविरोधी शक्तियों के प्रतिकार की प्रेरणा भी है-"सोचिए, कैसे कहाँ/ क्यों रेत में खोई नदी है/ फूल जितने भी खिले थे/ नोच डाले आँधियों ने/ बाढ़ आयी, जो बचे थे शेष/ उन सबको डुबोने/ प्रार्थना के शिल्प में/ कुछ कह रही घायल सदी है/ सिर्फ हम-तुम/ यातना की तपिस को पहचानते हैं/ भेड़िया किस शक्ल में है छिपा / यह भी जानते हैं / बनी रक्षा-कवच / जिसके लिए बहसें संसदी हैं।"

आशय स्पष्ट है कि नचिकेता के ये गीत जन-साधारण के असाधारण गीत हैं जो उन्हें बेचैन और उद्वेलित तो करेंगे ही, प्रेरित और ऊर्जस्वित् भी करेंगे। एक जन-पक्षधर रचनाकार की इससे बड़ी उपलब्धि दूसरी क्या होगी!

डॉ. राकेश कुमार सिंह

2 मई, 2009

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सिलसिला

अनजान घुटन	21
हवा की गंध	22
दुर्घटनाओं की व्यथा	23
हँसी का पुल	24
नयी सुबह लो	25
मन में आवाजाही	26
खामोशी भुतही	27
तेरा मुँह	28
मूर्च्छित समय	29
प्रश्न उद्धत	30
गाढ़े कुहासे में	31
कम वक्त	32
डरकर ज़ीना	33
कौन निरापद	34
गीत गूँजता है	35
इस नदी में	36
खुशबू के तन से	37
आदमकद उपेक्षा	38
सर्दियों में	39
कौन चाहेगा न खिलना	40
डरे हुए हम हैं	41
सूरज के नीचे की सूरत	42
हरेपन की प्रार्थनाएँ	43
मौसम का सरगम	44
भय का लभेरा	45
गीत की जरूरत	46
तुम्हारा नाम	47
दूषित पर्यावरण	48
सन्नाटे का दिल	49
क्या हुआ	50
कहो पखेरू	51
आज का दिन	52
आकाश नीला	53
कठिन समय	54
देख लो	55
सोचिए	56
रोशनी का संदेश	57
कौन परदा डालता	58
दर्द के गुंजलक	59
पदचिह्न अपना	60
पूरा दिन	61
घर में सन्नाटा	62
धीवरों की आँख	63
मौन ही रहा	64

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे सिरहाने 65
बहुत मुश्किल 66
साँप पर पाँव 67
यह अंधेरा 68
तापमान चढ़ रहा 69
बूंदें सावन की 70
गाँव का चेहरा 71
आप जैसा चेहरा 72
सच है 73
एक चिड़िया 74
गंध होते तो 75
कमरे का धुआँ 76
हो रही हैरत 77
जो कुछ दीख रहा 78
भटका आशय 79
यादों का जंगल 80
विष से भरे कटोरे 81
सुनो गौर से 82
जश्न मनायें 83
जंगल में आग 84
सीमाएँ 85
सपने रहे अधूरे 86
आईने की गर्द 87
अजब किस्सा 88
टूटे भरम 89
मन की व्यथा 90
अकेलापन 91
महानगर में 92
सुबह-शाम दूँ 93
चलो, बतियायें 94
सर्द मौसम 95
दोनों हाथ जले 96
बड़ी घुटन है 97
डर रहा पूरा शहर 98
फर्क 99
जिन्दगी का अर्थ 100
सच कहने से 101
गाँव है यह 102
गीत-विहग 103
कोस भर दुख 104
आंधियों को दोष 105
यादों की नदी 106
कटखना अँधेरा 107
कोई तो होगा 108
समय की आँख में 109
आनेवाला दिन 110
संकट के क्षणों में 111
सच बताना 112
खबर मिली है 113
हवा की बातें 114
खतरनाक हँसी 115
वे आये 116
भूमण्डलीकरण के झाँसे 117
उत्सव-सा आना 118
मैं हूँ गाँव में 119
आपका गुण 120
चहचहाने का भरोसा 121
दरख्तों का अन्तर्मन 122
जान गया हूँ 123
खेल जारी है 124
पुनर्नवा इच्छाएँ 125
भूल गए हैं लोग 126
शहर में 127
वक्त का आचरण 128

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह दिन	129	रोज होता हादसा	163
सहज नहीं है	130	संभव है	164
एक हादसा	131	मत कहना	165
थे कभी हम	132	अचानक	166
आँखों का रंग	133	समय की नदी में	167
सुरभि कचनारों की	134	उड़ान तो है	168
समय की चुप्पी	135	पहली वर्षा से	169
भय के कारण	136	हँसने की मजबूरी	170
बुरे समय से	137	चेहरा बदला है	171
ब्याज-वसूली में	138	फूलों से बात	172
है नहीं मुश्किल	139	कह न सकता	173
वह दिन	140	दोनों तटों पर	174
हँसी आपकी	142	क्या करें	175
चीजों पर पर्दा	143	सपनों के महल	176
रुहचुह घर	144	एक चुटकी धूप	177
आँख के आगे	145	पता लगा लो	178
नहीं आँखें चुराओ	146	नयी सदी में	179
घर-आँगन महका	147	माहौल नहीं बदला	180
धरती का टुकड़ा	148	एक डर	181
गुजरे घण्टे चार	149	युग की नदी में	182
वह गीत	150	बदले समय का चेहरा	183
नदी-सा मन	151	दुनिया सो रही है	184
नाटक-घर में	152	उनकी चतुराई	185
दोस्त बनकर	154	सपनों के व्यापारी	186
यह राह	155	कठिन समय में	187
खुशबू का सितार	156	रेत में खोई नदी	188
वसंत ने ली अँगड़ाई	157	घर का पता-	189
काश, गले मिलते	158	मुद्दा नहीं है	190
एक ठण्डापन	159	पत्ते-से हरे दिन	191
रोशनी की खोज	160	यह घर	192
रेशमी तिनके	161	मैं कैसे बदलूँ	193
बदलती ऋतुएँ	162	कटीं न रातें काली	194

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गहन उमस 195
मतलब की भाषा 196
रोशनी से डर 197
कहीं तीखी धूप 198
क्रुद्ध झंझावात 199
हलचल हवा की 200
घाव पर चीरा 201
बहुत दिनों के बाद 202
समय ठहाका मार हँसेगा 203
तब्दीलियों का रंग 204
दृश्य नहीं थिर 205
टूट का अन्तःकरण 206
भयानक साँप 207
आया पछुआ 208
सुबह की चाय 209
तस्वीरें बोल रहीं 210
रंग बदलना सीखो 211

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनजान घुटन

कई जरूरी काम छोड़
मैं घर से निकल गया

बाहर घना कुहासा
मन के अन्दर संशय है
यहाँ नहीं अजनबी व्यक्तिं के
आने का भय है
फिर भी बाहर आते ही
बेकल मन दहल गया

आया हूँ तो काम करूँ
कुछ सब्जी ही ले लूँ
अथवा किसी मित्र के घर
जाकर चौपड़ खेलूँ
समय हाथ में
आकर भी पारे-सा बिछल गया

क्यों लगता-
तीखी बदबू है भरी हवाओं में
आँधी आने की बेचैनी
बन्द दिशाओं में
इस अनजान घुटन से
सूनापन भी दहल गया ।

5.2.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हवा की गंध

क्यों नहीं हमने
अभी सूँघी हवा की गंध

एक क्षण ही
थरथराया जिस्म था दिन का
चोंच में ले उड़ी चिड़िया
जब नया तिनका
अचीते ही रह गये
अहसास के सम्बन्ध

सतह काँपी झील की या
कँपी परछाई
तैरती बतखें नहीं
मतलब समझ पाई
किया बरगद ने
सुबह के साथ था अनुबन्ध

ले न पाई धूप–
बारिस अनुभवों से होड़
हम ढलानों पर नहीं
पदचिह्न पाये छोड़
होंठ पर जिनके
लिखी है प्यार की सौगंध ।

12.1.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुर्घटनाओं की व्यथा

खुले नहीं दरवाजे
बाहर कब तक शांत रहूँ

घर के अन्दर
तनिक नहीं हलचल है
आहट है
धड़कन हैं, साँसें हैं
साँसों की गर्माहट है
होंठों पर क्यों
खामोशी का तीखा दंश सहूँ

घर के बाहर धूल
धुआँ, बदबू, सन्नाटा है
कसक रहा तलवे में चुभकर
टूटा काँटा है
किस जुबान से
इन दुर्घटनाओं की व्यथा कहूँ

नीम, निबौरी झरी
गीत कोयल का मौन हुआ
क्रुद्ध ततैया जैसा डंक
मारती है पछुआ
जहरीली है नदी
धार में कितनी दूर बहूँ ।

18.1.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हँसी का पुल

हँसो
रुको मत अभी
हँसी का पुल बनने दो

यहाँ अँधेरा, वहाँ अँधेरा
दोनो में थोड़ी दूरी है
शेष बीच में
आवाजाही होने की खानापूरी है
रज्जू का ही सही, मगर
पुल की खातिर रस्सी तनने दो

इस जंगल के पार
दिये-सा दीप रहा जगमग जीवन है
उल्लासों की चहल-पहल से
महक रहा घर का आंगन है
फूलों की भीनी खुशबू से
मौसम का रग-रग सनने दो

कोई तो है जो
मेरे घर में आकर बुनता सन्नाटा
खिड़की पर रक्खे गुलदस्ते में बोता
कीकर का काँटा
अब इस खतरनाक दुनिया को
नहीं नरक का दुख जनने दो ।

26.1.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नयी सुबह लो

जो कुछ भी कहना है, कह लो
तेजाबों से भरी नदी में
बनकर नाव ताव से टहलो

मौसम की
खुलती पाँखों से
चिड़िया की विस्मित
आँखों से
लेना है
तो नयी सुबह लो

पिघली
बर्फ हुई खामोशी
जो हर घर है
गयी परोसी
जितनी
सहन-शक्ति है, सह लो

टूटें
उपनिवेश के बंधन
लौटे गीतों का
भोलापन
माचिस की तीली-सा
दह लो।

26.1.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन में आवाजाही

मेरे मन के अन्दर-बाहर
धूप-छाँव की आवाजाही

आँखों की पुतली भर पसरे हैं
निचाट काँटों के जंगल
दूधभरी धानों की बाली के ऊपर
है लिखा अमंगल
आनेवाला समय हुआ है काला
पीकर नीली स्याही

चाहा था, चिड़िया की आँखों में
बसकर कुछ गीत सुनाना
मगर हुआ मुश्किल
जल में रहकर मछली की प्यास बुझाना
रखी गयी जब से सिरहाने
गर्म तेल से भरी कड़ाही

मोड़े कौन हवाओं का रुख
खुशबू की भाषा में बोले
अहसासों के नरम पाँव में
डाली गयी बेड़ियाँ खोले
बर्फ गिरे या आँधी आये
नहीं किसी के लिए मनाही ।

30.1.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खामोशी भुतही

शब्दों ने जो बात कही है
सच है, झूठ-प्रपंच नहीं है

चटक धूप से
निविड़ छाँह तक
ध्वज-सी फहरी हुई
चाह तक
पसरी खामोशी भुतही है

खुरच
समय को नाखूनों से
पूछे कौन प्रश्न
ब्रूनो से
तुमने कितनी व्यथा सही है

हमें चाहिए
हलचल ऐसी
धधके जो दावानल
जैसी
आँखें उसे तलाश रही हैं ।

4.2.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तेरा मुँह

तेरा मुँह क्यों धुआँ-धुआँ है

किसकी राहें नहीं रुकी हैं
और न आँखें कभी झुकी हैं
किस कंधे पर नहीं जुआ है

कौन न सहमा आघातों से
काँपा है झंझावातों से
हर पर्दा बेपर्द हुआ है

किसे मिला है सब कुछ पूरा
रहा न कोई स्वप्न अधूरा
रेशम नहीं हुआ पटुआ है

है सवाल तो उत्तर भी है
उठे हाथ में पत्थर भी है
प्यास लगी तो खुदा कुआँ है ।

10.2.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मूर्च्छित समय

ढाँपकर मुँह
सो रहा पथ में मुसाफिर

सो रहा यह चैन से है
बह रही जलधार
   लेकिन नैन से है
क्या उदासी
रहेगी इस जगह स्थिर

खुला है मुँह, बन्द आँखें
चुभ रही हैं
पत्तियाँ बनकर सलाखें
कब तलक
मूर्च्छित रहेगा समय आखिर

है मनाही हिलाने की
हाँकने की
हाँक में सुर मिलाने की
क्या मयस्सर
नहीं होगा जागना फिर ।

13.2.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रश्न उद्धत

वे नहीं आये
प्रश्न उद्धत आँख चमकाये

व्यर्थ ही मैने प्रतीक्षा की
वक्त की नाड़ी-परीक्षा की
व्यंग्य के
अहसास जम्हुआये

संधि-पत्रों पर खुदे अक्षर
पोछकर मुँह पसीने से तर
अनमनी
पदचाप बन जाये

एक दिन निश्चित झरेंगे फूल
और जायेंगे महकना भूल
गर समय विपरीत
बधुआये

सत्य का रुख जानना होगा
फर्क को पहचानना होगा
नदी में
जल-बिम्ब पथराये ।

22.2.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गाढ़े कुहासे में

छिप गयी हर चीज है
गाढ़े कुहासे में

छिप गये हैं
पेड़, पौधे, घास, पत्थर, फूल
गयी है चिड़िया चहकना
यहाँ जैसे भूल
चमक बाकी नहीं
पीतल और काँसे में

ठण्ड से किकुड़ी
उंगलियाँ बेतरह अँकड़ीं
पर, तपिश पर्याप्त दे पाती
नहीं सिगड़ी
सूर्य भी
है आ गया इस बार
झाँसे में

गाँव का बेचैन चेहरा
हुआ पीला है
औ' शहर का जिस्म भी
दिख रहा नीला है
शेष है ऊर्जा नहीं दिन के
दिलासे में ।

24.2.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कम वक्त

शायद सूर्योदय होने में
वक्त बहुत कम है

घना अँधेरा है
राहों पर बिखरा काँटा है
आँधी आने के पहले का
यह सन्नाटा है
लहूलुहान हुआ
अहसासों का हर मौसम है

दुखती हैं आँखें
अंधेपन के आघातों से
बदबू आती है घर में
आयी सौगातों से
और हुआ
बेहद उदास रंगों का सरगम है

हमें पता है कौन, कहाँ
कितने पानी में है
ढील कहाँ पर
संसद की खींचातानी में है
फिर फहरेगा
जली मशालोंवाला परचम है ।

27.2.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डरकर जीना

डरकर जीना क्या जीना है

मन में बैठ गया यह डर है
घुला हवा में
तेज जहर है
धड़क रहा भय से सीना है

बन्द आँख में नींद नहीं है
सपनों की
उम्मीद नहीं है
इतना पड़ा धुआँ पीना है

सतही मूर्च्छा टूट रही है
जमी बर्फ की तरह
नहीं है
हौंका गया सहज बीना है

फिर भी आग जलानी होगी
खामोशी
पिघलानी होगी
अभी उजास बहुत झीना है ।

6.3.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कौन निरापद

कौन यहाँ है आज निरापद

अन्दर काबा, बाहर काशी
लेकिन हम हो गये प्रवासी
कालिख पुते हुए दर्पण में
उभरी प्रेतच्छवि आदमकद

नहीं शब्द में अर्थ जरूरी
भूख-प्यास है खानापूरी
काई-कीचड़ से, फिसलन से
गया राजपथ लीपा शायद

दंगे, हत्या, लूटपाट हैं
फिर भी हर चेहरा सपाट है
प्रश्नचिह्न विस्मित आँखों की
पुतली में कर रहा कवायद

यहाँ अँधेरा, वहाँ अँधेरा
है कुहरे में ढका सवेरा
अगर उबरना शर्त नहीं तो
नहीं नींद की होगी सरहद ।

12.3.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत गूँजता है

गीत गूँजता है
आँखों की भाषा में

गीत महकता फूलों की खुशबू जैसा
तंपता गर्म जेठ से झरती लू जैसा
और चहक उठता है आक-
जवासा में

गीत खनकता पायल, चूड़ी, कंगन में
हँसी-ठिठोली, छेड़छाड़ में, चितवन में
लहराता आसंगों की
अभिलाषा में

गीत लिखा जाता है चुए पसीने से
धड़क रहे आपस में मिलकर सीने से
है मिठास की सेउदन
खील-बतासा में

गीत जिया करता खेतों-खलिहानों में
गोदभरी माँ की मीठी मुस्कानों में
दीखा हक की खातिर
उठे गड़ाँसा में

यह उड़ान है वनपाखी की पाँखों में
और सिहक है हरी दूब की शाखों में
अन्वेषण है सृजनशील
जिज्ञासा में ।

18.3.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस नदी में

इस नदी में
बह चुका पानी बहुत

बीतती सदियाँ रहीं
औ' राख ठण्डाती रही
पर ठिठुरती रात में भी
साँस गरमाती रही
नहीं चूल्हे से
रही है तपिश अनजानी बहुत

धुआँ पच्छिम से
मँगाकर चाहते हम रोशनी
भर गयी जिससे शिराओं में
शिशिर की कनकनी
कोयले से
अवाओं को हुई हैरानी बहुत

बीच में दरका हुआ
दीखा समय का आईना
धधक उठती आग कब है
जलाये ईंधन बिना
अब करेगी हवा
मौसम से न मनमानी बहुत ।

19.3.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुशबू के तन से

फूलों की खुशबू के तन से
राख झरेगी

मानचित्र में
नदी नहीं, केवल पहाड़ हैं
वन हैं, घाटी में सुखाड़ है
फसल नहीं, वनबेर-झाड़ हैं
तितली जिसमें
मधुमक्खी-सी भ्रमण करेगी

घर के आंगन में सन्नाटा
बियाबान है
कुहरा, खाली आसमान है
अंधियारा सहरा समान है
जिनसे रंगों की सैलानी
आँख डरेगी

शब्दों की दुनिया
होती असमर्थ नहीं है
कविता केवल अर्थ नहीं है
आँखें तन में व्यर्थ नहीं हैं
निश्चित ही
धरती पर सुबह नयी
उतरेगी ।

23.3.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदमकद उपेक्षा

वही आदमकद उपेक्षा
पुनः लेकर क्या करूँ

वही ठण्डे हाथ
ठण्डी साँस, ठण्डाया बदन
जुगनुओं से भरे मावस के
उजालों की छुअन
डरी आँखों को सुनहरा
ख्वाब देकर क्या करूँ

खिले थे
जो गुलमुहर के फूल
सारे झर गए
धुंध से लिपटी
सुबह को अधिक सूना कर गए
नाव टूटी है
समन्दर-बीच खेकर क्या करूँ

डबडबाये हैं नयन
ताजा फफोलों की तरह
चू गए आँसू अचानक
गिरे ओलों की तरह
सड़े हैं अण्डे
इन्हें हर बार सेकर क्या करूँ ।

26.3.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर्दियों में

सर्दियों में
धूप का अहसास कर लें

यह कुहासा भी
नहीं इतना घना है
पार जिसके झाँकना
सबको मना है
बाँह में अपनी
खुला आकाश भर लें

धूप से ऊष्मा मिलेगी
सादगी भी
पसीने से
धुले मुँह की ताजगी भी
स्वप्न बनकर नयन के
नभ में बिचर लें

सुनी क्या आहट
न कलियों की चटक की
और किशलय में हुई
पहली थिरक की
इस नयी अनुभूति की
तह में उतर लें ।

29.3.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कौन चाहेगा न खिलना

कौन चाहेगा न खिलना
गुनगुनाना

सर्दियों में तपिश को महसूस करना
तोड़ गहरी नींद की कारा उबरना
उमस में ठण्डी हवा का
गुदगुदाना

कली के मुँह खोलने की चहट सुनना
जोड़ तिनके पाखियों-सा नीड़ बुनना
नमी पाकर दूब जैसा
लहलहाना

गर्म साँसों की छुअन मीठी परसना
पुतलियों में स्वप्न की झींसी बरसना
धमस सुनते ही सुबह की
चहचहाना

नयन-कोरों का अचानक ही फड़कना
खुजाती दायीं हथेली को निरखना
दिन सुखद स्मृतियों के
लौट आना ।

4.4.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डरे हुए हम हैं

डरे हुए हम हैं
दुबके हैं अपने ही घर में

दिन गुजरा
जिसकी किस्मत में नहीं उजाला है
मेहँदी-सनी हथेली पर कुछ
धब्बा काला है
बारूदों की गंध
धुआँ फैला है अम्बर में

आँखों में आतंक
लिखा चेहरे पर मातम है
कन्धे पर लादे सलीब
आया यह मौसम है
डरी घृणा का
मेघ घुमड़ता है दुनिया भर में

नरपिशाच
नादिरशाहों का जश्न अनोखा है
अमन-सरोवर का जल सोख
चुका पनसोखा है
पूरी देह
नहीं झँप पाई छोटी चादर में।

6.4.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सूरत के नीचे की सूरत

सूरत के नीचे की
सूरत की सूरत पहचान गया हूँ

वे माहिर हैं
ढकने में भाषा का छल तीरंदाजी से
सच को झूठ, झूठ को सच में
बदल रहे हैं लफ्फाजी से
मंदिर में स्थापित
मूरत की सूरत पहचान गया हूँ

कारसेवकों की जमात की
है औकात समझ में आई
मंदिर-मस्जिद की बिसात पर
शह औ' मात समझ में आई
शिलादान की नयी
मुहूरत की सूरत पहचान गया हूँ

जिसने हँसिया और
हथौड़ा से अपना जयगान लिखा था
तनी हथेली की भाषा में पूर्ण
मुक्ति-अभियान लिखा था
उनकी बढ़ती गई
जरूरत की सूरत पहचान गया हूँ।

8.4.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हरेपन की प्रार्थनाएँ

पत्थरों पर
सिर पटकती हैं हवाएं

वन नहीं है
जो हवा का रोष रोके
घोंसले हों किस जगह
वनपाखियों के
हो गयी हैं
दिग्भ्रमित सारी दिशाएँ

नदी में कीचड़
भरा है, जल नहीं है
मछलियों, जल-जीव की
हलचल नहीं है
चिलचिलाती
धूप खीसें कटकटाए

अब न
मेघाच्छन्न नीलाकाश होगा
बढ़ा भू के ताप का
अहसास होगा
व्यर्थ होंगी
हरेपन की प्रार्थनाएँ ।

12.4.04

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मौसम का सरगम

आज सुबह की हवा गरम है
कैसा दिन आया

गायों को परवाह नहीं है भूखे लेरू की
नहीं सुनाई देती है आवाज पखेरू की
बदला बेमौसम मौसम है
कैसा दिन आया

जल है नहीं नदी में, जल में नहीं मछलियाँ हैं
आसमान में मेघ, मेघ में नहीं बिजलियाँ हैं
तृण, तरु, लता हुए बेदम हैं
कैसा दिन आया

पेड़ नहीं, वन नहीं, यहाँ ऊँचे-ऊँचे घर हैं
वनपाखी को कहीं घोंसला नहीं मयस्सर है
बदला कुदरत का सरगम है
कैसा दिन आया

ज्यादा चढ़ी हुई सूरज की लगती आँखें हैं
और भोंकती हवा बदन में गर्म सलाखें हैं
प्राणवायु के रुद्ध कदम हैं
कैसा दिन आया ।

15.4.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भय का लभेरा

कसे हर मस्तिष्क को
भय का लभेरा है
जो सुनाई दे रहा वह
स्वर न मेरा है

हिचकिचाहट से भरी
झरती उदासी है
कंठ में फँस गई
कड़वाहट धुआँ की है
एक बटुरी धूप
खाँची भर अँधेरा है

परकटे वनपाखियों की
फड़फड़ाहट-सा
क्षीण बेवा नाजनीं की
मुस्कुराहट-सा
भोर के सिर पर चढ़ा
बेसुध उबेरा है

ठूँठ हर अहसास की
लग रहीं शाखें हैं
या रतौंधी से
हुई कमजोर आँखें हैं
एक घर में
साँप-नेउर का बसेरा है ।

15.4.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत की जरूरत

क्या जरूरत है नहीं अब
गीत गाने की

क्या हुई अनुभूति
कलियों की चटक की है
किसलयों में हुई सिहरन की
सिहक की है
क्या न है चाहत
अधर के मुस्कराने की

क्या कभी
पहली जुताई की दरक देखी
क्षीरमुख शिशु- होंठ में
होती थिरक देखी
दूब से सीखी
कला क्या लहलहाने की

डबडबाई आँख में क्या
झाँककर देखा
हींड़ता है
आँत को वह बवण्डर देखा
क्या सुनी आवाज
दुख के कसमसाने की ।

16.4.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम्हारा नाम

भीनी खुशबू के अक्षर से
कहाँ तुम्हारा नाम लिखूँ

तुमने गंध नहीं सूँघी
सिर से चू रहे पसीने की
और नहीं अनुभूति हुई
गाढ़ा अंधियारा पीने की
कैसे गर्म जेठ की लू से
अगहन का परिणाम लिखूँ

तुमने नहीं चांदनी के
पोखर में जी भर स्नान किया
नीलकंठ बनकर जनहित में
कभी नहीं विषपान किया
कैसे जलती हुई
अंगीठी पर वासंती शाम लिखूँ

महसूसी है चुभन न
फूलों की कोमल पंखुड़ियों की
नहीं रचाई है शादी तुमने
मुन्नी की गुड़ियों की
गर्म साँस के अहसासों पर
कैसे पूर्ण विराम लिखूँ ।

21.4.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूषित पर्यावरण

पर्यावरण हुआ दूषित है
फिर भी चेत नहीं

फटी परत ओजोनों की
धरती का ताप बढ़ा
बैरोमीटर का पारा
सीमा से अधिक चढ़ा
नदी हुई बेहद कलुषित है
फिर भी चेत नहीं

पेड़ कटे जंगल की काया
सिकुड़ रही हर पल
फूल-वनस्पतियों की आँखें
हैं डर से विह्वल
कुदरत का सरगम कुंठित है
फिर भी चेत नहीं

बाढ़, अकाल और
सूखे का बढ़ा प्रकोप यहाँ
प्राणवायु के न्यायालय से
तामिल हर सनहा
महाभूकम्पों का इंगित है
फिर भी चेत नहीं ।

28.4.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सन्नाटे का दिल

धड़क रहा सन्नाटे का दिल
आओ, साथ चलें

हमने देखा
दिन में भी हैं उगे हुए तारे
ठण्डी साँसें लेता मौसम भी
डर के मारे
पीछे पड़े हुए हैं कातिल
आओ, साथ चलें

आँधी आने के
पहले का यह सन्नाटा है
रात अंधेरी है, रस्ता
बिल्ली ने काटा है
क्या होगा अनबन से हासिल
आओ, साथ चलें

पपड़ाये होंठों के
ऊपर मृदु मुस्कान लिखें
तपते रेगिस्तानों में बन
नख्लिस्तान दिखें
ज्यादा दूर नहीं है मंजिल
आओ, साथ चलें ।

30.4.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या हुआ

क्या हुआ, जो
यक्ष है भूला पता अलकापुरी का

चीख आकर है दबी
होंठों-तले कहवाघरों के
दृश्य आंखों में उभरते हैं
पुराने खण्डहरों के
शोर के माहौल में
स्वर खो गया है बाँसुरी का

सगुनपंछी
सरपतों की झलासों में खो गया है
सीपियों का दर्द अंधी
गुफाओं-सा हो गया है
है महकना धर्म
लेकिन फूल की हर पंखुरी का

जो न है शापित
हमें वह विरल-सा क्षण ढूँढना है
मिलेगी क्यों रोशनी जब
हर तरफ कुहरा घना है
धाह से आतंक की
है सोत सूखा माधुरी का ।

3.5.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहो पखेरू

कहो पखेरू
हर मौसम में तुम क्यों रहे उदास

खोज सको तो खोजो
अपनी छीज रही पहचान
किसने कर ली कैद तुम्हारे
पर की मुक्त उड़ान
छीनी मीठी चहक
चुरायी नींद, हरी है प्यास

किसने काटे पेड़
उजाड़े जंगल, नोचे नीड़
किसके भय से काँप रहे हैं
थर-थर साखू, चीड़
भूल गये
निर्व्याज दहकना
खुश हो युवा पलाश

बँधी नदी, हो गई
प्रदूषित नदियों की जल-धार
नींद उड़ाने, लहू चूसने का
पनपा व्यापार
अभी मुग्ध है विश्व
देखकर विश्वग्राम का हास ।

5.5.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज का दिन

आज का दिन
हम किसे सौगात में दें
सोचना

क्या सुबह की ओस को दें
या कि दें आकाश को
गुलमुहर की टहक को दें
या सिहरती घास को
थरथराती है
दुआघर में कहर-सी
यातना

एक ही चेहरा
हजारों रंग में दिखने लगा
और सपना आँख का इतिहास
फिर लिखने लगा
है धुएँ के
राजपथ पर थेथरों का
वन घना

एक है आशा
कि होगी पृथ्वी मुस्कान-सी
भोर के अहसास-सी, संगीत-सी
सुर, तान-सी
चौकसी से
पड़ेगा अंधी गुफा को
लाँघना ।

8.5.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आकाश नीला

देखिए उस पार
थर-थर काँपता आकाश नीला

हाँ, वही आकाश
जिसमें सुबह का सूरज उगा था
खोलकर पर उड़ानें भरने लगा
हारिल-सुगा था
जानिए क्यों
हो गया है यह समय
बकवास नीला

क्यों गए हैं वनपखेरू
भूल खुलकर चहचहाना
है बिसारा डरे बच्चे के
अधर ने मुस्कुराना
क्या न है यह मुक्ति के
अहसास का उपहास नीला

तुम न जानें क्यों
घृणा से देखते हो राजपथ को
और मुट्ठी तानकर दुहरा रहे
पिछली शपथ को
हो गया तब्दील पतझर में
अगर मधुमास नीला ।

10.5.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कठिन समय

कठिन आज का बहुत समय है

आलावों में आग नहीं है
खुली आँख में
जाग नहीं है
सन्नाटा, सम्मोहन, भय है

उघर रही हर सिअन, बुनाई
पत्ती, मंजरियाँ
कठुआई
आंखों में केवल विस्मय है

चीजों में तब्दील हुआ दिन
स्पन्दन, धड़कन
नामुमकिन
ठोस वस्तु हो गया हृदय है

पूछ रहा मुझसे मेरा कल
क्या है नहीं
समस्या का हल
क्यों कविता से खारिज लय है ।

18.5.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

देख लो

देख लो उस गिलहरी का
पेड़ पर चढ़ना-उतरना

देख लो ठण्डी हवा में
झील के तन का सिहरना
नींद अच्छी चीज है, पर
वक्त पर होगा उबरना
औक्टोपस की जकड़ को
चाहिए महसूस करना

ओस उजली मोतियों-सी
दूब के सिर पर टंगी है
रात भर जलसा हुआ था
इसी से लगती थकी है
देख लो तरु के शिखर पर
धूप का तिरना-पसरना

वक्त है तो कैक्टस के
फूल उंगली से परख लो
मुस्कुराना नींद में
सोये हुए शिशु का निरख लो
खोलकर आँखें धुएँ के
पार होता है गुजरना ।

22.5.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सोचिए

सोचिए, खोया कहाँ
वह प्यार का संसार है

हैं नहीं जंगल घने औ'
दरख्तों की छाँव भी
चैन से कैसे रहेगा
यह शहर, यह गाँव भी
जब तपिश का बढ़ रहा
बेतरह कारोबार है

नदी सूखी, लापता
निर्झरों की पहचान है
गूँजते वन में नहीं
वन-विहग के सहगान हैं
बाग को हासिल नहीं
खुशबुओं का उपहार है

स्वाद बदला, रंग बदले
गंध में बदलाव है
छेड़ पर्यावरण की
पड़ने लगी बेभाव है
सोचिए, क्या इस
समस्या का नहीं उपचार है ।

25.5.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोशनी का संदेश

रोशनी से मिल रहा संदेश चौखट लाँघने का
उठो, मत सोये रहो, यह वक्त है खुद जागने का

झर गई खिलकर
सुबह तक महमहाती रातरानी
जिसे हँसने चहचहाने की
पड़ी कीमत चुकानी
चहक उट्ठा जागकर संसार सोये आँगने का

किवाड़ों पर थाप
देकर अभी गुजरी हैं हवाएँ
घोंसले में छिपी चिड़ियों ने
सिकोड़े पर फुलाए
फूल ने खिलकर भरोसा दिया तंद्रा त्यागने का

पेड़ के ऊपर
गिलहरी फिर लगी चढ़ने-उतरने
मुँडेरे पर सगुनपंछी गीत में
सुर-तान भरने
आज मौसम कर रहा ठट्ठा दुआएँ मांगने का

जिन्दगी की
हलचलों में खो गयी पगडण्डियाँ हैं
बन गया भूलोक जब से अमरीका
की मण्डियाँ है
कर लिया संकल्प जिसने पृथ्वी को धाँगने का ।

28.5.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कौन परदा डालता

कौन परदा डालता
दिन के उजालों पर

सुबह हर दिन
खोद देती अंधेरे की जड़
पार करती है मसायल के
घने जंगल
एक-से तिल
नहीं होते सभी गालों पर

स्वाद में हिलतीं
नहीं पाँखें बगेरी की
है खुसी लकड़ी मकानों की
बड़ेरी की
और है पीपल
उगा लोनी दीवालों पर

चोट से बिखरे
न आँखों में उगे सपने
झरेंगे ही पकी रोटी में
सटे थपने
मत लगाना
बन्दिशें खूँ के उबालों पर ।

8.6.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दर्द के गुंजलक

जो कहा वह सच नहीं है
सच कहूँ तो क्यों कहूँ

क्यों कहूँ कि मुझे कैसे
किस जगह तोड़ा गया
तनी थी जो रीढ़
उसको किस तरह मोड़ा गया
दर्द के इस गुंजलक की
कैद में कब तक रहूँ

जानता हूँ-
नींद की गोली खिलाई जा रही
दवा कहकर जहर की घूँटें
पिलाई जा रहीं
चुभन दारुण यातना की
हृदय पर कब तक सहूँ

जानता हूँ-
रक्तरंजित राह पर चलना कठिन
अगर आँधी तेज है तो
दिये का जलना कठिन
प्रबल झंझावात के
विपरीत मैं कब तक बहूँ ।

16.6.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पदचिह्न अपना

छोड़ना होगा समय के वक्ष पर
पदचिह्न अपना

अभी तो फैला हुआ है
हर तरफ गाढ़ा धुंधलका
नहीं जिसमें लिखा जायेगा
उजाले का मुचलका
मत हवा की थपकियों से
पत्तियों की तरह कँपना

सोचिए क्यों हो रहा
बदरंग है चेहरा सुबह का
क्यों नहीं इस जेठ में है
गुलमुहर का रंग टहका
मौत है-
हो अगर जिन्दा
बचा कोई नहीं सपना

कहाँ लिक्खूँ गीत
कोई पृष्ठ अब है नहीं सादा
लहलहाता है मगर
बेनमी जीने का इरादा
पड़ेगा काँटों-भरी
हर राह का विस्तार टपना ।

22.6.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूरा दिन

पूरा दिन काँपते जिया
जब से छू साँप ने लिया

सोया तो
सो सका नहीं
जेहन था कहीं
मन कहीं
धूप गा रही थी
मर्सिया

एक भी
नहीं कली खिली
धूल, धुआँ, रेत
ही मिली
कहाँ-कहाँ बँटे
शुक्रिया

किस्मत का
लेख नहीं यह
दरकेगी दर्द की
सतह
आयेगी सुबह
शर्तिया ।

27.6.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर में सन्नाटा

कोई मुझे बता दे
मैं क्यों यहाँ खड़ा हूँ

आँखें हैं जल रहीं
मगर मुँह धुआँ-धुआँ है
किस दहशत से हाथों का
उड़ गया सुआ है
हरा-भरा बाहर से
भीतर से उजड़ा हूँ

वन में हंगामा है
घर में सन्नाटा है
टूट गया चुभकर
नगफेनी का काँटा है
वर्षों कीचड़ में गड़कर भी
नहीं सड़ा हूँ

धोखे की टट्टी से
हवा मिली ताजा है
खोज-खबर के लिए
खुला हर दरवाजा है
खुशगबार मौसम के
पीछे नहीं पड़ा हूँ ।

30.6.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धीवरों की आँख

हँस रहा
कोई यहाँ फिर हँस रहा है

नदी के तट पर
घिरा काला अंधेरा
डूब कालिख में गया
उज्ज्वल सवेरा
जहाँ फैलाये हुए फन
अजदहा है

नदी पसरी
सामने है अधमरी-सी
धीवरों की आँख है
बेहद डरी-सी
झर रहा
खामोशियों का कहकहा है

इस नदी पर
पुल बनाना ही पड़ेगा
चीर तम को जगमगाना
ही पड़ेगा
यहाँ झंझावात
हो बेकल बहा है ।

10.7.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मौन ही रहा

अब तक मैं मौन ही रहा
कुछ भी तो है नहीं कहा

पछुआ
कुछ इस तरह चली
काँप रहे गाँव, घर, गली
खून से गई हवा नहा

गाछ गए
वेग से उखड़
अलग हुए डाल, तने, जड़
अन्हुआया नहीं अजदहा

धुंध का
तना वितान है
काला दिन, आसमान है
ठिठुरा बेपर्द कहकहा

जितना भी
तेज चले लू
फैलेगी निश्चित खुशबू
अगर उठे भोर चहचहा।

16.7.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मेरे सिरहाने

कोई तो मेरे सिरहाने
आकर खड़ा हुआ

यहाँ न कोई रिश्ता-नाता
संगी- साथी हैं
मेरे पास
न मोटर-गाड़ी, घोड़ा-हाथी हैं
दुर्दिन रोके राह
प्रश्न जैसा है अड़ा हुआ

चाह न है इस
अँधियारे के पार उतरने की
अमलतास के फूलों जैसा
खिलने, झरने की
बदहवास है मौसम
पत्ता-पत्ता सड़ा हुआ

इस मौसम में भी
मैं गुलमोहर-सा खिल लूँगा
गरमाई सांसों की हर
धड़कन से मिल लूँगा
भले पाँव के तलवे में हो
काँटा गड़ा हुआ ।

19.7.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुत मुश्किल

बहुत मुश्किल है
समय को पार करना

यह नदी अल्हड, भरी है
नहीं इसको
पार करने के निमित कोई तरी है
सोचकर ही इस नदी में पाँव धरना

काँपने क्यों लगे डर से
निकलना बाहर
पड़ेगा बन्द घर के खोंड़हर से
नींद अच्छी है, मगर होगा उबरना

यह समय बेहद कठिन है
रात लगती
अप्सरा-सी, विदूषक की तरह दिन है
तड़तड़ाती नसों में उद्वेग भरना

आँधियाँ-तूफान आयें
नाव जैसा ही
धरा यह थरथराये, डगमगाये
रोशनी बनकर अंधेरे से गुजरना ।

25.7.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साँप पर पाँव

अंधियारे में
पड़ा साँप पर पाँव
अचानक

हैं सड़कों पर
बिछे हुए काँटे बबूल के
आ जाना मत इधर कभी
निज राह भूल के
छूते ही तट
डूब गई है नाव
अचानक

दुखती धूल-सने
पाँवों में फटी बिवाई
शीत-लहर के भय से है
भयभीत रजाई
लगी हकासी
हवा ढूँढने छाँव
अचानक

पूँछ उठाए हुए
गिलहरी इधर झाँकती
खेतों-खलिहानों की चौहद्दी
फलांगती
लगता है-
हो गया काठ हर गाँव
अचानक ।

30.7.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह अंधेरा

यह अंधेरा
आपको भी तो डँसेगा

सर्पिणी की आँख
जैसा है भयानक
टूटता शाहीन जैसा ही
अचानक
भेड़िये जैसी
हँसी जालिम हँसेगा

इस अंधेरे ने
कई पहने मुखौटे
जो गये हैं पास इसके
नहीं लौटे
साँप है यह
आस्तीनों में बसेगा

इस अंधेरे से
दिया नन्हाँ जलेगा
रोशनी की भृकुटी में
बल पड़ेगा
जब शिकंजा
मुक्ति का इस पर कसेगा ।

2.8.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तापमान चढ़ रहा

तापमान चढ़ रहा
समय के थरमामीटर का

साहुकार ने
सुबह-सुबह कुण्डी खड़काई है
चढ़े व्याज की चढ़ी आँख की
झलक दिखाई है
जिससे घर के
स्वाभिमान का चेहरा है दरका

बच्चों की चीखों से
पूरा घर बेहाल हुआ
पत्नी का घुघुआया मुँह
गुस्से से लाल हुआ
पसर गया
जम्हुआता कुहरा जहुआते डर का

इस संकट से
शीघ्र निजात हमें पानी होगी
नये भोर की नयी रोशनी
फैलानी होगी
सीना होगा
हर पैबन्द दुखों की चादर का ।

4.8.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बूंदें सावन की

सिहरन-सी नस-नस में उतरी
बूंदें सावन की

गरम-गरम साँसों के हैं
दरवाजे खोल रहीं
दूबों की फुनगी पर टँगी
ओस से बोल रहीं
लेने लगी सांस हैं गहरी
बूंदें सावन की

महकी सारी रात इतर-सी
भीगी पुरवाई
जब आँखों में संकेतों की
घटा उमड़ आई
मीठी सिसकारी-सी टघरीं
बूंदें सावन की

एक छुअन से मन की सारी
थकन खंगाल रहीं
अंगड़ाई ले रहे बदन पर
छिड़क गुलाल रहीं
हैं खुशबू की तनी मसहरी
बूंदें सावन की ।

8.8.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गाँव का चेहरा

सोचकर हैरान हूँ
क्यों गाँव का चेहरा तपा है

गाँव की पगडण्डियों पर
शोर है, कलरव नहीं है
फूल से अब तितलियों का
रह गया मतलब नहीं है
घरों की दीवाल पर भी
शेर का पंजा छपा है

शहर से तालीम ले जो
पीढ़ियाँ आईं यहाँ हैं
लग रहीं मासूमियत का
कवच पहने अजदहा है
खौफ से जिसकी रहा
माहौल पूरा कँपकँपा है

अब न रिश्तों और नातों की
यहाँ ऊष्मा मिलेगी
जातिवादी हवाएँ होकर
गरम बेहद चलेंगी
तिलमिलाकर रह गये
मीरा, कबीरा, सरहपा हैं ।

12.8.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आप जैसा चेहरा

आप ही जैसा
हमारे पास भी चेहरा नहीं है

वही चेहरा, जहाँ हरदम रेशमी मुस्कान होती
तनी गर्दन से टपकती शार्दूली शान होती
जिसे छूने से हवाएँ गरम भी
कतरा रही हैं

शेरनी भी तो भयानक आप-सी दिखती नहीं है
भेड़िये की आँख जिस पर एक क्षण टिकती नहीं है
कोबरे के काट खाने का जिसे
खतरा नहीं है

लूट, भ्रष्टाचार, हत्या का बिया बोता रहा जो
फूट, फिरकापरस्ती का बहाता सोता रहा जो
अपहरण की घास चरकर भी
रहा पगुरा नहीं है

खीस, कूढ़न, घुटन की परछाइयाँ जिस पर नहीं हैं
उगी चिन्ता की हजारों झाइयाँ जिस पर नहीं हैं
जो कभी विपरीत मौसम से
रहा घबरा नहीं है ।

18.8.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सच है

सच है
कविता और गीत में
है कोई टकराव नहीं

जैसे साँसों से
धड़कन का रिश्ता बहुत सघन है
गहरे चिन्तन और मनन का
रिश्ता बहुत सघन है
कभी अलग होती
पेड़ों से है पेड़ों की छाँव नहीं

सोचो, क्या हो सकी
आग से अलग कभी उष्मा है
आँख बिना क्या कभी दिखाई
दे पाती सुषमा है
फूलों से उसकी खुशबू का
हुआ कभी अलगाव नहीं

शब्द अर्थ के बिना
नहीं दुनिया में जी सकता है
कभी न मिटता राग-स्वरों का
अंतरंग रिश्ता है
बिना जलाये
कोई भी घूरा होता आलाव नहीं ।

20.8.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक चिड़िया

एक चिड़िया उड़ रही आकाश में

है भयानक ठण्ड
कठुआई हवा
और कमरे में भरा
काला धुआँ
खौफ के, आतंक के संत्रास में

उड़ रही है तोड़कर
बन्धन सभी
बन्द होगी अब न
पिंजड़े में कभी
फड़फड़ाने लगी पर उल्लास में

अब लिखेगी
नयी कविता जीत की
लय गढ़ेगी सृजन के
संगीत की
भले हों काँटे चुभे अहसास में

यह कहानी
है न उजड़े बाग की
स्फूरण है लपलपाती
आग की
पसर जाना चाहती इतिहास में ।

21.8.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गंध होते तो

गंध होते तो
हवा के संग बहते

गुजरते वन-बाग
सर से, नदी-तट से
गले मिल लेते फसल से
वृद्ध वट से
तितलियों के
कान में कुछ बात कहते

गाँव की पगडण्डियाँ
भटका न पातीं
तपिश रेगिस्तान की
झुलसा न पाती
पीर बेबा
स्त्री की तरह सहते

झोंपड़ी से महल तक
चक्कर लगाते
ईद-होली एक-सा
हर दिन मनाते
सूखकर हम
नहीं लकड़ी-सा उलहते ।

28.8.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कमरे का धुआँ

सोचिए
किस दौर में शामिल हुए

खिड़कियाँ खोलीं कि
आयेगी हवा
छँटेगा इस बन्द
कमरे का धुआँ
क्या खुलेपन से
    मगर हासिल हुए

पच्छिमी गोलार्ध से
आकर सुबह
खोल देगी
हर अंधेरे की गिरह–
मान यह
    संघर्ष से गाफिल हुए

क्या न खुशबू
बाँटने के नाम पर
है हरापन चूसने का
यह हुनर
जो बने रहबर
    वही कातिल हुए ।

27.8.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो रही हैरत

हो रही हैरत
तुम्हारे आचरण से

कल कहा था
कैक्टस के फूल हो तुम
गीत विस्मृत
व्याकरण की भूल हो तुम
त्वचा पर
उभरी खरोंचें हैं छुअन से

खिलखिलाए
तपे रेगिस्तान में भी
गुफ्तगू करते रहे
सुनसान से भी
ठेल देते थे
पहाड़ों को लगन से

क्या हुआ जो
लग रहे बेहद डरे हो
साँस ठण्डी ले रहे हो
अधमरे हो
कहाँ सीखा है
मुकर जाना वचन से ।

30.8.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जो कुछ दीख रहा

जो कुछ दीख रहा
केवल सच वही नहीं है

सावधान होकर
हम पथ में पग धरते हैं
काँट, कूस, रोड़ों का
अन्वेषण करते हैं
फिर भी ठोकर लग जाती
यह बात सही है

खोली थी खिड़कियाँ–
हवा ताजा आयेगी
बदबू, सीलन, घुटन
बहाकर ले जायेगी
लेकिन आ पछुआ
अस्तित्व झिंझोड़ रही है

भेजा था संसद में
प्यार जिसे भी देकर
क्या उसने ही नहीं
पीठ में भोंका खंजर
लोकतंत्र की नींव
यद्यपि बहुमत ही है ।

3.9.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भटका आशय

दुनिया है विस्मय में

साँस गयी जब नापी
दुनिया भय से काँपी
बदले रंग समय के

रिश्तों का ढाँचा-ढब
खोकर अपना मतलब
भटक गया आशय से

कुछ गोरे, कुछ काले
पाँव बिवाईवाले
गले मिले हैं लय से

फटी नहीं अब तक पौ
लेकिन दीपक की लौ
डिगी नहीं निश्चय से ।

7.9.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यादों का जंगल

मेरे मन में
पसर रहा यादों का जंगल है

इस जंगल में
हरे-भरे तृण, गाछ, लताएँ हैं
किसिम-किसिम के जीव-जन्तु के
झुण्ड, सभाएँ हैं
आदम को था
हौवा ने जो दिया वही फल है

इस जंगल में
भाँति-भाँति के जीव विचरते हैं
कुछ भर रहे कुलाँचें, कुछ
लड़ते हैं, मरते हैं
खुशबू-सनी हवा में
घुली सनक है, हलचल है

इस जंगल में
कभी-कभी बजता सन्नाटा है
कभी-कभी सपनों को भी
चुभ जाता काँटा है
मगर ठमकती नहीं
गीत की रुनझुन पायल है

10.9.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विष से भरे कटोरे

हम तो संरक्षक हाथों से
गये भँभोरे हैं

हैं वह आँख
गई जिसकी हर दृष्टि चुराई है
सींढ़ लगे धरखा पर रक्खी
दियासलाई हैं
जिसकी तलब
हमेशा होती भोरे- भोरे है

फटे हुए मोजे से
पूरी एँड़ी झाँक रही
जिसे हुई हासिल सपनों के
फल की फाँक नहीं
हर दिन गये
परोसे विष से भरे कटोरे हैं

लोकतंत्र के मुँह पर
मारा गया तमाचा हम
भूख, गरीबी, बदहाली
गढ़ने का साँचा हम
इसीलिए
हर बार बजट ने
बदन बिदोरे हैं ।

15.9.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुनो गौर से

सुनो, गौर से सुनो!
हवाएँ क्या कहती हैं

क्या कहती है कली, पत्तियाँ क्या कहती हैं
झरने के पहले कितनी चोटें सहती हैं
किसके लिए
नदी हर क्षण बहती रहती है

क्या गाती रहती है चिड़िया चहक-चहककर
खुशबू क्या कहती दुनिया से महक-महककर
अंगड़ाई लेकर
क्यों पुरवाई बहती है

क्या कहता है माथे से चू रहा पसीना
कितना कठिन कर्म है सही समझ से जीना
जगी सीपियाँ
कितना विकट दर्द सहती हैं

किसे नहीं पड़ता है हर दिन, हर पल मरना
और चाहता नहीं नींद से कौन उबरना
किसके क्षुब्ध
नयन में अग्नि नहीं दहती है ।

20.9.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जश्न मनायें

बही खौफ से भरी नदी है
जश्न मनायें
आतंकित लग रही सदी है
जश्न मनायें

हम अचरज से
देख रहे हैं इनको-उनको
चूल्हे को, तसले को, बीच
रखे उचकुन को
अर्थहीन हर चतुष्पदी है
जश्न मनायें

जितने फूल खिले
बागों में, बिखर चुके हैं
ऊन नये स्वेटर के सारे
उधर चुके हैं
कलुषित अण्डे की जर्दी है
जश्न मनायें

अपने घर की खुशी
नहीं अच्छी लगती है
दूर देश की परी-कथा
सच्ची लगती है
गर्म जेठ में भी सरदी है
जश्न मनायें ।

21.9.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जंगल में आग

सुना, कि फिर
पूरे जंगल में आग लगी है

सूँघ गया है साँप
समय माहुर-माता है
बन्द समस्याओं का हुआ
नहीं खाता है
जाँच-कमीशन के अन्दर
पल रही ठगी है

शर्म और अपमान
न है वर्जना किसी की
सुन्न स्नायुओं के कारण
है काया धीकी
बियावान में भी दहशत की
घास उगी है

रात रहस्यों-भरी
मगर अजनबी नहीं है
खतरनाक खेलों में दुनिया
उलझ रही है
नहीं चैन से नीड़ों में
सो रही खगी है ।

24.9.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सीमाएँ

उसने मेरी
सारी सीमाएँ तय कर दीं

क्या खाना-पीना
कब रोना-मुस्काना है
क्या कुछ करना और कहां
आना-जाना है
हर उड़ान भरती
इच्छा की पाँख कतर दी

निरख तड़प चिड़िया की
मन बेचैन रहे ना
सूखी हुई
नदी में पड़े न नौका खेना
अखबारों ने
नई सुर्खियाँ और खबर दी

नहीं दूब-सा
पाकर नमी सिहकना होगा
और न आँखों में बन स्वप्न
चमकना होगा
वीतराग हो
सहनी होगी गरमी-सरदी ।

29.9.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सपने रहे अधूरे

सपने रहे अधूरे
अब तक पूरे नहीं हुए

सोचा था-
अबकी मौसम में
किलकेगी कोंपल
खनक उठेगी
मुस्कानों की खुशबू की पायल
लेकिन गुजर गया यह मौसम
दिन को बिना छुए

सोचा--नयी फसल आई तो
थिरकेंगी खुशियाँ
फूस चढ़ेगी नयी छान पर
चहकेगी दुनिया
फूले नहीं कनेर
बबूलों के निखरे अँखुए

ऊब, बेबसी
दरवाजे पर आकर खड़ी रहीं
अंधकार की भूरी आँखें
जिन पर गड़ी रहीं
हैं ज्यादा छिल गए
बिवाई भरे हुए तलुए।

3.10.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आईने की गर्द

आईने की गर्द
आकर पोंछती है रात

हैं उदासी
ऊब की बिखरी हुई किरचें
घिस गए नाखून से डर
किस तरह खुरचें
हथेली पर गाल धरकर
सोचती है रात

जो गए घर से
न अब तक लौटकर आए
एक आदिम गंध मन में
घुमड़, जम्हुआए
अनस में ही बाल सिर के
नोचती है रात

नींद से बोझिल
हवा की हो रहीं पलकें
बिना सोये ख्वाब आयेंगे
नहीं कल के
उँगलियों से उगे कूबड़
कोंचती है रात ।

11.10.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अजब किस्सा

डरा हूँ मैं
मरेगा वह
अजब किस्सा यहाँ का

बहुत ऊँची
उठाई जा रही मीनार उनकी
गिरेगी एक दिन
नूनी लगी दीवार उनकी
भयावह हो गया इतना अधिक
करतब खुदा का

लगा मुझको
यहाँ पर कुछ अंधेरा बढ़ रहा है
अपाहिज जो रहा कल आज
सींढ़ी चढ़ रहा है
फटेंगे कान के परदे
हुआ ऐसा धमाका

सड़क पर हो निडर
चलना हुआ इतना असम्भव
सुनिश्चित है समस्या से
घिरे दिन का पराभव
न है स्पर्श अब
सुविधाजनक ठण्डी हवा का ।

15.10.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टूटे भरम

टूटे सारे
भरम सुहाने

सोचा था कि
सुबह बहुत खुशनुमा मिलेगी
चहक, लहक, खुशबू से
भीगी हवा चलेगी
होंठ-होंठ पर
थिरकेंगी मीठी मुस्कानें

लेकिन ऐसी हवा चली कि
सूखे अँखुए
पैने हुए समस्याओं के
भोथर चहुए
हत्या, दंगे और लूट के
खुले दहाने

अपना ही घर लगा मुझे
अजनबी-अपरिचित
रोग, शोक, चिंता की
कठिन मार से विस्मित
ऊब, घृणा, आक्रोश सुनाये
नये तराने ।

18.10.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मन की व्यथा

नदी
हमारे घर के अन्दर-बाहर
एक बहा करती है

नदी किनारे खड़े
सैंकड़ों पेड़ झाँकते हैं लहरों में
खोल रहीं मुट्ठियां उड़ानें
वनपाखी के खुले परों में
हवा दिशाओं के
कानों में मन की व्यथा
कहा करती है

घर के अन्दर के
कोलाहल बाहर नहीं सुनाई पड़ते
धुआँ, प्रदूषण, घनी धुंध में
सपनों के नाखून उखड़ते
हम से, तुम से, आम-जनों से
ऋतुएँ दूर रहा करती हैं

अब बाहर का सूनापन
है पैस गया घर में आहिस्ते
बदली अहसासों की भाषा
बदल गये चीजों के रिश्ते
तनहाई से ऊबी आंखें
क्या-क्या नहीं सहा करती हैं ।

23.10.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अकेलापन

फिर अकेलापन
हमारे नाम मत लिखना

फूल लिखना, रंग लिखना
खुशबुएँ लिखना
मत बगीचे के विटप
सूखे हुए लिखना
भोर या दोपहर लिखना
शाम मत लिखना

एक अँजुरी धूप
अँगुरी भर हंसी लिखना
डबडबाई आँख भर
उज्जर खुशी लिखना
हादसे, आतंक का
पैगाम मत लिखना

स्वेद-जल से धुले
मुँह की ताजगी लिखना
तिलमिलाती ऊब की
नाराजगी लिखना
नाउम्मीदी से भरा
अंजाम मत लिखना ।

25.10.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महानगर में

बच्चे ने फिर मुझे पुकारा
महानगर में

सुविधाओं के पीछे
पागल दुनिया दौड़ी
जिससे घायल हुई
नदी की छाती चौड़ी
फँसी पुरानी नाव
नदी के बीच भँवर में

बच्चा हँसा
लगा सरसों के फूल खिले हैं
मीठे-मीठे मनुहारों से
पगे गिले हैं
स्मिति की रौनक
घोल गया सुनसान नजर में

कभी आदमी
नहीं जियेगा पत्थर बनकर
हँसना चाहेगा भदेस से
उठकर ऊपर
ढूँढेगा अमृत
मौसम से मिले जहर में ।

28.10.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुबह-शाम दूँ

किसको उजली सुबह, शाम दूँ
किसकी बढ़कर बाँह थाम लूँ

वर्तमान लगता अतीत है
यह अच्छा
वह बुरा गीत है
छाँह सुशीतल नहीं, घाम लूँ

मैं भी खाली, तुम भी खाली
खाली है होली-
दीवाली
सब्र-शान्ति से अभी काम लूँ

है सूरत अजनबी सभी की
कुछ पिचकी
कुछ दबी-दबी-सी
इस मौसम में क्यों विराम लूँ

कोई भले नहीं पहचाने
व्यंग्य कसे या
मारे ताने
राह न दक्षिण, पकड़ वाम लूँ ।

30.10.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चलो, बतियायें

चलो, गले मिलकर
बतियायें

जिये बहुत दिन
हम-तुम आतंकों की छाया में
तेज सनसनी रही दौड़ती
ठठरी काया में
अब मौसम पर
नजर गड़ायें

बूचड़खाने में
रहकर भी दया न माँगी है
जीवन : जंग-लगी बिन
बेंटोंवाली टांगी है
अंधियारे का रंग
उड़ायें

साँसें लें खुलकर
आँखों का हर सपना जी लें
भर-भर अँजुरी नेह-सुरभि
अपनेपन की पी लें
रकटें नहीं
नहीं रकटायें ।

2.11.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर्द मौसम

दिन अंधेरा, रात काली
सर्द मौसम है
दहशतों की कैद में
लेकिन नहीं हम हैं

नहीं गौरैया
यहाँ पाँखें खुजाती है
घोंसले में छिपी चिड़िया थरथराती है
है यहाँ केवल अमावस, नहीं
पूनम है

गूँजती
शहनाइयों में दब गयीं चीखें
दिन नहीं बदले, बदलती रहीं तारीखें
हिल रहीं परछाइयों-सा
हिल रहा भ्रम है

वनों को
वनपाखियों का घर न होना है
मछलियों को ताल पर निर्भर न होना है
दर्ज यह इतिहास में हो रहा
हरदम है ।

5.11.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों हाथ जले

मेरे भी दोनों हाथ जले
अपनी ही जली मशालों से

सोचा था, जलीं मशालें तो
यह अँधियारा छँट जायेगा
इस घुटन, उमस, निर्वासन का
गाढ़ा कुहरा हट जायेगा
लेकिन मैं उलझा रहा सदा
रोटी से जुड़े सवालों से

औरों से मैं लड़ते-लड़ते
अपना ही चेहरा भूल गया
रोपे थे गुलमोहर-गुलाब
लेकिन उग घना बबूल गया
भूखी आँतों का समझौता
होता है नहीं निवालों से

उनका पूरा घर जला
हमारे घर में भी है आग लगी
जिन अँखों में था प्यार, वही
आँखें लगतीं सुलगी-सुलगी
काली भेड़ों पर परदा है
पड़ जाता नीम उजालों से ।

9.11.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बड़ी घुटन है

बड़ी घुटन है
आओ, घर की खिड़की
रोशनदान खोल दें

घर के बाहर की हलचल का
होता कुछ अंदाज नहीं है
मन में झरते सन्नाटे की
भाषा में अल्फाज नहीं है
फिफरी पड़े हुए होंठों पर
    ठिसुआई मुस्कान ओल लें

इतने परिवर्तन कि
चीजों ने अपनी पहचान गवाँ दी
लगता है- फूलों की खुशबू में
मौसम ने चुभन मिला दी
कोलाहल से भरे गीत को
    मधुर छन्द, लय, तान, बोल दें

जहाँ कहीं है धुआँ वहीं पर
आग मिलेगी, खोज करें तो
कुछ भी नहीं असम्भव होगा
अगर हार से नहीं डरें तो
सपनों के पथराये पर में
    कुछ रंगीन उड़ान घोल दें ।

12.11.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

डर रहा पूरा शहर

छगुनिए कि
डर रहा पूरा शहर क्यों

चीख है, बारूद है
बदबू भरी है
और सूखी
फूल की हर डंघुरी है
चटखता लेकिन नहीं यह
काँचघर क्यों

आदमी की शक्ल पहने
भेड़िये हैं
सत्य भी तो
लग रहे द्विभाषिये हैं
सुर्ख आँखें हो नहीं पातीं
मगर क्यों

हो न पाया क्यों अभी
तक चित्र पूरा
रह गया
संकल्प औ' सपना अधूरा
सो नहीं पाता समय अब
नींद भर क्यों ।

15.11.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फर्क

सुनो
फर्क है बहुत
बोलने- बतियाने में

सोच-समझ में
अक्सरहा अन्तर होता है
कुछ का अर्थ इधर
कुछ अर्थ उधर होता है
बेहद अन्तर होता है
रोने-गाने में

कुछ लोगों के
ढंग अलग होते जीने के
अलग तरीके हैं सोने
खाने, पीने के
होता फर्क नदी के बहने
बँध जाने में

चुभन फूल में भी होती है
काँटों में भी
अन्तर्हित अस्मिता
पेड़ में, साटों में भी
होता है संगीत
घरों में, तहखाने में ।

18.11.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिन्दगी का अर्थ

खूबसूरत है सुबह
या शाम
मैं कैसे कहूँ

भोर : सोयी झील के
दिल में नई हलचल हुई
धड़कने सस्मित प्रकृति के
पाँव की पायल लगी
चहचहाता दोपहर का घाम
मैं कैसे कहूँ

शाम को वन से
पखेरू घोंसले में आ गये
घरों के छप्पर सृजन के
धुएँ से गहना गये
मिले सपनों को नये आयाम
मैं कैसे कहूँ

एक में गति है
अपर में चैन है, विश्रांति है
संसृति दोनों तटों के
बीच की उत्क्रांति है
जिन्दगी का अर्थ
है संग्राम
मैं कैसे कहूँ ।

21.11.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सच कहने से

सच कहने से
मैं तो बाज नहीं आऊँगा

तुमने हैं बंदिशें लगाईं
हर सवाल पर
अपने नये प्रश्न को
कन्दुक-सा उछालकर
लेकिन हर सवाल की गुत्थी
सुलझाऊँगा

तुमने मान लिया
हम हैं मुहरे बिसात के
कौर तुम्हारे लिए सब्जियाँ
दाल, भात के
किन्तु धुआँ बनकर
आँखों में कड़ुआऊँगा

तुमने टोका, तुमने रोका
नहीं रुका मैं
झंझावातों ने झकझोरा
नहीं झुका मैं
हो जितना प्रतिरोध
लक्ष्य तक मैं जाऊँगा ।

24.11.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गाँव है यह

गाँव है यह
देश की यह राजधानी है नहीं

आज तक झुलसा इसे पाई नहीं पछुआ हवा
यद्यपि तन है झिंझोड़ा गया लाखों मर्तबा
निर्झरी का नीर
बोतलबन्द पानी है नहीं

यहाँ होली, ईद, बैसाखी मनाई जा रही
और कजरी-लावणी बेहिचक गाई जा रही
गीत है यह
आज की कविता सयानी है नहीं

नहीं अगड़े और पिछड़े में गया बाँटा इसे
लूट लेता हर बजट में हो रहा घाटा इसे
मूर्ख है
यह अपढ़ भी है
निपुण ज्ञानी है नहीं

डाकघर यह नहीं, वह हो गयी इन्टरनेट है
वह शिकारी और यह अब तक बना आखेट है
जड़ी-बूटी है
हुई हर्बल नुरानी है नहीं ।

28.11.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गीत-विहग

आसमान से
गीत-विहग उतरा धरती पर

यह सदियों से
स्वप्न-लोक में विचरा करता था
पारिजात-पुष्पों की छवि पर
रीझा करता था
इन्द्रधनुष के
रंगों से था सराबोर अंतर

अब इसने सूँघी
खुशबू बह रहे पसीने की
धमस सुनी है बीजों के
नरमाते सीने की
इसकी लय में
थिरकेगा अँगड़ाई ले बंजर

पढ़ ली है इसने
भाषा हर फटी बिवाई की
ग्रामवधू की आँखों से झर
रही जुन्हाई की
यही मुक्ति-गीतों के
कोरस का है सच्चा स्वर ।

30.11.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोस भर दुख

कोस भर दुख
और डग भर हर्ष लेकर क्या करूँगा
मैं तुम्हारा रेशमी संदर्श
लेकर क्या करूँगा

तुम बदलना चाहते
इतिहास को पूजा-घरों में
फूल गूलर के खिलाना
चाहते हो बंजरों में
पुरातत्वी मूल्य का
आदर्श लेकर क्या करूँगा

पंख सारे नोचना
तुम चाहते वनपाखियों के
होंठ पर पहरे लगाना पदों
दोहों, साखियों के
ठण्ड से सिकुड़ा हुआ उत्कर्ष
लेकर क्या करूंगा

रोशनी दे
उस दिये की लौ बचाना चाहता हूँ
तेज लू में गुलमुहर-सा
खिलखिलाना चाहता हूँ
मुक्ति दे जो नहीं
वह संघर्ष लेकर क्या करूँगा ।

1.12.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आंधियों को दोष

आँधियों को दोष क्यों दें
हम अगर सम्हले नहीं

आँधियाँ आकर
दरख्तों को हिलातीं
वेग से हर धूल-तिनके
को उड़ातीं
है वही चट्टान
जो आघात से पिघले नहीं

छान-छप्पर को उड़ा
देतीं हवाएँ
परिन्दों के
घोंसले कैसे बचाएँ
क्या समस्या आज है यह
थी कभी पहले नहीं

कब तलक
टकराव से बचते रहेंगे
मार जुल्मोसितम की
सहते रहेंगे
सोचने से सिर्फ
चेहरे वक्त के बदले नहीं ।

4.12.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यादों की नदी

आना जी
मेरे घर घुम-फिरकर आना जी
खुली आँख में
सपने बनकर मुस्काना जी

एक नदी
घर के आगे बहती यादों की
जिसमें हैं निर्मल जल, सीप
शंख, कादो भी
ठमक तटों पर
पल-दो-पल भी बतियाना जी

कुछ यादें मीठी
तो कुछ हैं बहुत कसैली
कुछ की गाँठ खुली, कुछ
बन्द किये हैं थैली
इनके डर से
वापस लौट नहीं जाना जी

मौसम की आँखों में
आँखें डाल चहकना
नहीं चोट खाकर
शीशे की तरह चटखना
अँजुरी भर लेकर
चुटकी भर लौटाना जी ।

8.12.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कटखना अँधेरा

यह अँधेरा कटखना है

कुहासा फैला हुआ है
दृष्टि को ऐला हुआ है
लतरती-सी यातना है

थरथराया नदी का जल
है न स्पंदन, है न हलचल
मगर मौसम अनमना है

ठण्ड से ठिठुरी हवाएँ
तन कहाँ जाकर सुखाएँ
चुक गयी संवेदना है

एक-सा होता न हर दिन
चिल्हकता है दर्द लेकिन
मुक्ति-खातिर सोचना है ।

10.12.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोई तो होगा

अपनी खिचड़ी अलग पकाए
कोई तो होगा
हर मौसम पर नजर गड़ाए
कोई तो होगा

एक धुआँती चुप्पी घर के बाहर पसरी है
जिसकी नस-नस में नंगी आवाजें उतरी हैं
इस हालत पर घात लगाए
कोई तो होगा

मन के अन्दर अवसादों की है बह रही नदी
आतंकों के घेरे में है लहूलुहान सदी
फिर कंधे पर क्रास उठाए
कोई तो होगा

मैं भी चुप हूँ, तुम भी चुप हो, है चुपचाप फिजाँ
सूई के गिरने पर भी होती आवाज यहाँ
फिर भी मुँह में शब्द बचाए
कोई तो होगा ।

12.12.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय की आँख में

फिर समय की आँख में हम
आँख डालें

यह समय जो
लग रहा निचुड़ा हुआ-सा
पिलपिला-सा, डरा-सा
सिकुड़ा हुआ-सा
क्यों न कन्दुक की तरह
इसको उछालें

आँधियाँ इस में नहीं
हलचल नहीं है
इस नदी में
रेत ही है, जल नहीं है
क्या तटों को बरकने दें
या सम्हालें

यह गहन है
आदमी की यातना-सा
है शिशिर की शीत का
कुहरा घना-सा
ओढ़ लें या
खाट खरही पर बिछा लें ।

17.12.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आनेवाला दिन

आनेवाला दिन
हम सबको रहा डरा

खतरनाक इससे भी ज्यादा दिन होगा
साँसें लेना तक जब नामुमकिन होगा
बिगड़ा-बिगड़ा
दीखेगा सबका चेहरा

चीजों की पहचान बहुत मुश्किल होगी
आँखों में बस दहशत की महफिल होगी
हर घर के
अन्दर उग आयेगा सहरा

हमें नुमाइश बनकर ही जीना होगा
भय की भाथी बना हुआ सीना होगा
उलझा अनसुलझे
प्रश्नों का अधिक सिरा

अंधियारा कुछ ज्यादा ही गहरा होगा
गहरे रंगों के ऊपर खतरा होगा
गीतों में होगा
गुस्सा-आतंक भरा ।

20.12.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संकट के क्षणों में

मुझे संकट के क्षणों में मुस्कुराना आ गया है
ठण्ड से अकड़े बदन को थरथराना आ गया है

आ गया है मुझे पैदल बीहड़ों को पार करना
है खुमारी भले
गहरी नींद से आया उबरना
हवाओं को खुशबुओं के गीत गाना आ गया है

एक नन्हीं-सी गिलहरी पेड़ पर चढ़ती-उतरती
आँधियों में दिये की
लौ है नहीं क्या कर गुजरती
नग्न सच की अँख से आँखें मिलाना आ गया है

हर तरह की यात्राएँ भटकनों में खो गयी हैं
भार से दबकर कनिष्ठा
स्याह पत्थर हो गयी है
पाँव की हर बिवाई को गुनगुनाना आ गया है

छोड़ देंगे वृक्ष वन के पतझरों को याद करना
मौन को भी आ गया है
अब मुखर प्रतिवाद करना
है अंधेरे का न डर, लुक्का जलाना आ गया है ।

19.12.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सच बताना

सच बताना
तुम कहाँ से आ रहे हो

तुम नहीं हो वह
मिला था कल हमें जो
दिखा था बेचैन औ'
विह्वल हमें जो
अभी पसरे
घाम-सा मुस्का रहे हो

तुम्हें ढूँढा
जंगलों में, गाँव-घर में
आदमी में, पक्षियों में
जानवर में
क्या न तुम
परिचय छिपा भरमा रहे हो

बताना
क्या कान में आकर कहा था
नये युग के मंत्र-सा जो
लग रहा था
ग्रहों को
उपग्रहों को, उसका रहे हो ।

24.12.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खबर मिली है

खबर मिली है
कि यह मौसम दगाबाज है

अफवाहों ने ही
है सारा खेल बिगाड़ा
पूरा सच है नहीं झूठ से
गया बहाड़ा
सब कहते हैं-
वक्त बहुत ही कारसाज है

भीड़ लगी है-
चौराहे पर लोग खड़े हैं
एक-दूसरे से अनजान
थके-उखड़े हैं
पछुवा के
झोंके का ऐसा ही रिवाज है

कल ज्यादा होगा काला
जानें, पहचानें
रेतेंगी भोथर चाकू से
ये मुस्कानें
बदले मौसम का
इतना बदला मिजाज है।

27.12.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हवा की बातें

हवा की बातें
हवा से चल रही हैं

है बहुत मुश्किल समय का कहीं रुकना
बोझ माथे पर उठाये हुए झुकना
गर्म साँसें हैं
मगर हलचल नहीं है

ठण्ड में होती दुखद है चोट हल्की
चुनचुनाहट देह में भर गयी कल की
रात भर
परछाइयाँ बेकल रही हैं

है किसे मालूम क्या होगा यहाँ पर
बर्फ से ढक जायेगा संगीत का स्वर
वंचना हर
आदमी को छल रही है

कभी संशय का नहीं उल्लेख होगा
आँधियों का ही लिखा अभिलेख होगा
आस्था इतिहास
बनकर पल रही है ।

30.12.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खतरनाक हँसी

बेहद खतरनाक है
शातिर हँसी आपकी

जब हँसते हैं आप
अंधेरा बढ़ जाता है
नशा नदीदे
वनबिलाव पर चढ़ जाता है
आतंकित कर रही
किनाराकशी आपकी

जलते धू-धू शहर
झुरा जातीं मुस्कानें
अस्मत खो देती
अपने होने का माने
झूम रहीं
माहुर में रातें डँसी आपकी

चारों ओर
भयावह सन्नाटा जहुआता
आगत पर मरघट का
सूनापन मँडराता
फाँस गले में
है जालिम चौकसी आपकी ।

8.1.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे आये

दुर्घटना घटने पर
    वे आये

हम थे
डरते रहे पड़ोसी से
अपनी अन्दरूनी
खामोशी से
पत्ते ज्यों पाला से
    भँगुराये

आँखों में
टघरी डर की स्याही
थथमी सपनों की
आवाजाही
मुद्दत हुई सुबह को
    मुस्काये

मुखर नहीं
दिन के मजमून हुए
गुजर गया हर मौसम
बिना छुए
गेहुँअन ठनक-ठनक कर
    बिलमाये ।

15.1.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमण्डलीकरण के झाँसे

भूमण्डलीकरण क़े झाँसे
छले गये हैं हम
पछुवा से

हम इतने मजबूर नहीं थे
भोले थे, मगरूर
नहीं थे
नहीं अपरिचित थे
दुनिया से

समय न इतना बदहवास था
मकर चाँदनी का
उजास था
ढके नहीं थे दृश्य
कुहा से

दिन इतना बेचैन नहीं था
मुँह में भरा कुनैन
नहीं था
नाच रहे हम सब
तकुआ-से ।

24.1.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उत्सव-सा आना

आना
मेरे घर हर दिन
उत्सव-सा आना

आना, ज्यों बच्चा माँ की गोदी में आये
पाकर धीमी आँच नया चूल्हा गरमाये
फूलों की
खुशबू-सा
घर-घर में लहराना

आना, जैसे होंठों पर मुस्कान उभरती
आँखों की धरती पर गहरी नींद उतरती
आपस में
जुड़ रही हथेली को
गरमाना

आना, जैसे किसलय में हरियाली आती
पके पपीते के गुद्दे में लाली आती
पाकर
उचित नमी
बीजों जैसा अँकुराना

आना, जैसे लहू धमनियों में आता है
और नयन में खुशियों का जल भर जाता है
बनकर
मीठी नजर
थके तन को सुहराना ।

28.1.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं हूँ गाँव में

गाँव है मुझमें
कि मैं हूँ गाँव में

मैं समझ
पाया नहीं यह आज तक
क्यों नहीं बेचैन कर
देती हतक
धूप है मुझमें
खड़ा मैं छाँव में

इस बहस से
है न कोई फायदा
हो गया खतरा कहाँ का
कायदा
जीत है शह में
कि अगले दाँव में

दर्द का
बढ़ता गया आकाश है
निहत्था लेकिन रहा
इतिहास है
चुभ रहे काँटे
नजर में, पाँव में ।

2.2.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आपका गुण

आप कहिए-
आपका गुण क्यों न गायें

आपके डर से
जमाना थरथराता
नीड़ में भयभीत पाखी
दुबक जाता
आप चाहें तो
नदी उलटी बहायें

आप हैं साँसें
हवा औ' धूप-पानी
आप कविता, आप ही
नाटक-कहानी
झुकी सिजदे में
सभी हैं प्रार्थनायें

आप से पाकर
इशारा सुबह होती
मौत से हर जिन्दगी की
सुलह होती
आप ही
विपरीत कर देते हवायें ।

9.2.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चहचहाने का भरोसा

रो रही मुन्नी सुबह से
क्या मनायेंगे नहीं

इसे गुड्डा और गुड़िया
या खिलौना चाहिए
एक राजा, एक रानी
एक बौना चाहिए
प्यास नन्हीं
कामनाओं की बुझायेंगे नहीं

कभी रोती, कभी हँसती
रूठ जाती है
गोद में आकर
पकड़ से छूट जाती है
रेशमी स्पर्श क्या
इस पर लुटायेंगे नहीं

अभी रूठी है
झरेगी मखमली बौछार-सी
गुदगुदायेगी थके मन को
उमड़ते प्यार-सी
चहचहाने का
भरोसा क्या दिलायेंगे नहीं ।

16.2.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरख्तों का अन्तर्मन

आज दरख्तों का
अन्तर्मन सिहर रहा है

हवा किवाड़ों पर
आकर दस्तक देती है
घने कुहासे की हर खोज
खबर लेती है
दहशत का तेजाब
नसों में टघर रहा है

यह कैसी बरसात
हवा में नमी नहीं है
त्वचा जलानेवाली गर्मी
थमी नहीं है
झुण्ड गिद्ध का
जंगल-जंगल बिचर रहा है

मगर न है
चर्चा बेमानी हरियाली की
सपनों की भाषा लगती
तीखी गाली-सी
पथरीला पथ
अँधियारे से गुजर रहा है ।

21.2.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जान गया हूँ

तुम कितने पानी में हो
यह जान गया हूँ

तुम गूलर के फूल खिलाते हो बबूल में
हीरे का कण ढूँढ रहे हो रेत-धूल में
कर काली करतूतों का
अनुमान गया हूँ

मन बहलाते तुम गुजरात, गोधरा से हो
फेंक अयोध्या के हर ओर रहे पाँसे हो
भोली हसरत खतरनाक है
मान गया हूँ

हर दिन जाल सुनहरा फेंक रहे हो हम पर
चाह रहे हो कब्जा करना हर मौसम पर
समझ तुम्हारे सपनों का
आख्यान गया हूँ

अब भी जुड़ी हथेली में गर्मी बाकी है
बीहन नहीं जलेगा, अभी नमी बाकी है
शब्द व्यर्थ हैं नहीं, अर्थ
पहचान गया हूँ।

25.2.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खेल जारी है

अयोध्या में बने मन्दिर
कई मस्जिद ढहाकर भी

रहेगा खेल जारी यह
मदारी ने बताया है
परिन्दा देशद्रोही था
शिकारी ने बताया है
चलेगा चाल टेढ़ी ही
खिलाड़ी अब यहाँ पर भी

हुई है घोषणा
हर अँख में नश्तर चुभा देंगे
जहाँ चिनगी हुई मद्धिम
वहीं जाकर हवा देंगे
मुनादी कर रहे हैं
मक्तलों पर आज रहबर ही

कुएँ का जल हुआ खारा
बचाना खुशबुओं को है
लगी है रोशनी चुभने
छिपाना आँसुओं को है
हमारी हर नदी है
क्यों न हों सारे
समुन्दर भी ।

(प्रवीण तोगड़िया की घोषणा सुनकर)

2.3.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुनर्नवा इच्छाएँ

सच है
कभी नहीं मरती हैं
पुनर्नवा इच्छाएँ

इच्छा है--गाँवों की
पगडण्डी-सा बल खाने की
लहूलुहान हुई चिड़िया की
आँखें हो जाने की
लहरें मार रहीं
फसलों की हर बाली सुहराएँ

इच्छा है--बन जाने की
रोटी से चिपके थपने
बचपन की मुस्कान
षोडसी की आँखों में सपने
निरख क्षीरमुख शिशु के
होंठों की थिरकन खो जाएँ

इच्छा है कि हर गुस्ताख
नजर से नजर मिलाएँ
और पसीने से लथपथ
हर तन की थकन मिटाएँ
हों खुशबू से लदी
सभी घर तक जा रही हवाएँ ।

10.3.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूल गए हैं लोग

भूल गए हैं लोग
घरों में भी खुलकर हँसना

आज नया सूरज उगकर छिप गया कुहासे में
या फिर नमी उतर आई कुरकुरे बतासे में
घुन की किस्मत है
गेहूँ के साथ-साथ पिसना

कहवाघर के होंठों पर जम गए ठहाके हैं
घायल समाचार जैसे अहसास यहाँ के हैं
जिन्हें हादसों के
आहिन में पड़ा सदा धँसना

बरस रहे ओलों के डर से निर्वासित होकर
नदी किनारे बीन रहा मौसम कंकड़-पत्थर
घोंघा, सीपी, शंख
मीन से भरा नहीं बसना

खुशबू भटक गई पर्वत-दर्रों में, घाटी में
शेष न है उर्वरा जुते खेतों की माटी में
अँकुरायेगा नहीं
नमी पाकर बीहन उसना ।

16.3.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहर में

सुनो, शहर में आकर
अपना परिचय भूला हूँ

आँखों पर
सपने से पहले चश्मा आया है
होंठों पर मुस्कान नहीं
दहशत की छाया है
बिना बेंट के
मैं कोने में पड़ा बसूला हूँ

नये हादसों के खतरे से
है दिन डरा हुआ
अंदर से खोंखड़
बाहर से लगता भरा हुआ
डँढ़ नहीं गन्ने का
मैं तो सिर्फ पथूला हूँ

यहाँ कहीं
रिश्ते-नातों की
ठण्डी छाँव नहीं
दुख बाँटे आपस में मिलकर
ऐसा गँव नहीं
गूंगा, बहरा हूँ
अंधा हूँ
लंगड़ा, लूला हूँ ।

21.3.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वक्त का आचरण

भोर की
ठण्डी हवा आती नहीं अब

धूप पहले थी जहाँ
अब है अंधेरा
साँप से भयभीत
लगता हर सपेरा
हैं दिया में
तेल औ' बाती नहीं अब

हर जगह
आतंक का पर्यावरण है
हुआ नकली वक्त का
भी आचरण है
फिक्र रुककर
साँस ले पाती नहीं अब

आँख में जिन्दा
चमक है मगर कल की
रंग के संगीत की
पहचान हल्की
फूल से है
गन्ध बतियाती नहीं अब ।

24.3.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह दिन

यह दिन भी
वैसा ही दिन है

जैसा परसों, वैसा कल था
दहशत में डूबा हर पल था
सूरज का मुँह आज
मलिन है

वनपाखी हैं डरे-डरे-से
ढरक रहा जल कज डबरे से
राहें छेंक खड़ा
धामिन है

चीजों की पहचान हुई गुम
नहीं फूल में खुशबू-कुंकुम
रंगों का अहसास
कठिन है

उजड़ा-सिकुड़ा हर दरख्त है
बिका हुआ हर ताज-तख्त है
पर, चूल्हे में शेष
अगिन है ।

28.3.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सहज नहीं है

सहज नहीं है
यहाँ चैन से रहना, मुस्काना

बहुत सहज है
किसी सुन्दरी का पीछा करना
खतरा भाँप खुली आँखों की
पलकों का गिरना
बिना किये कुछ काम
शाम को वापस घर आना

कठिन नहीं है
चलते-चलते कहीं ठहर जाना
अपने किये हुए वादे से
साफ मुकर जाना
तेज हवा के बीच
साँस लेने में अन्हुआना

मगर कठिन है
सपनों का इतिहास नया गढ़ना
अपने हाथों की रेखाओं का
मिजाज पढ़ना
सही समय पर
सही शब्द से सही अर्थ पाना।

30.3.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक हादसा

आज चैन से जीना-मरना
एक हादसा है

खामोशी है
कहीं न कोई पत्ता खड़क रहा
पास हमारे आने से झिंगुर भी
हड़क रहा
गहरे जल में मौन उतरना
एक हादसा है

काँप रही धरती
पेड़ों की जड़ें काँपती हैं
डाली पर बैठी चिड़िया
बेतरह हाँफती है
मगर नींद से नहीं उबरना
एक हादसा है

खुशमंजर हैं लोग
जमाना बेहद सुन्दर है
विश्वग्राम की आँखों में
सपनों का सागर है
ज्ञापन पर विश्वास न करना
एक हादसा है ।

2.4.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थे कभी हम

सोचिए
किस दौर में हम आ गये हैं

थे कभी हम
भोर की मुस्कान जैसे
लोकगीतों की सहज लय
तान जैसे
आज सूरज
देखकर चुँधिया गये हैं

रोशनी की
खोज में रत हम रहे हैं
हर सृजन के कंठ में
थिर कहकहे हैं
सूँघ पछुवा की महक
भकुआ गये हैं

अँधेरे, आतंक का ही
राज होगा
चीखना अब
दर्द से
अपराध होगा
बिना फूले
कहर कीकर ढा गये हैं।

8.4.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँखों का रंग

वे उनसे
बेहद डरते हैं

जिनके हाथों में
कोई हथियार नहीं है
सिर पर छाया, रहने को
घर-द्वार नहीं हैं
घूम रहे खानाबदोश
जो बेघर-से हैं

जिनके हाथों की हरकत
हर सृजन-गीत है
जिनकी रचना वर्त्तमान
जिन्दा अतीत है
आनेवाला कल
करता जिनके सिजदे है

जब इनकी
आँखों का रंग बदल जाता है
तानाशाहों का भी हृदय
दहल जाता है
टिकते ताजोतख्त
नहीं दुनिया भर के हैं ।

11.4.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुरभि कचनारों की

बागों में है चहल-पहल त्योहारों की
चर्चा में आ गयी सुरभि कचनारों की

ढलक गया ऋतु के सीने से आंचल है
शांत झील में हुई अचानक
हलचल है
अंगड़ाई सुषमा खुशबाश उभारों की

मंजरियों की भेंट मिली अमराई से
मीठी थपकी
मिली सुघड़ पुरवाई से
मुखर हुई भाषा गूँगे मनुहारों की

खरगोशों-सी आँखें हुईं पलाशों की
टूटी नींद
खुमारीभरे झलासों की
पायल छनक गयी रस की बौछारों की

नयी बहू-सी चौंक गयीं कच्ची कलियाँ
लगी मनाने
लता हवा से रंगरलियाँ
हर आहट पर बहकी नजर बहारों की

यह मौसम है मुस्का रही रंगोली का
चुहल, चिकोटी
चुटकी, हँसी, ठिठोली का
साँसें गरमाई ध्यानस्थ बिहारों की ।

17.4.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय की चुप्पी

आओ, हम पढ़ लें
इस डरे समय की चुप्पी

यह जो समय
बहुत मुश्किल से साँसें लेता
किन्तु, न बढ़ने धड़कन क्षुब्ध
हवा की देता
पेड़-वनस्पतियों से झरे
समय की चुप्पी

होती है वाचाल
सदा ही सन्नाटे में
हल्की चोट पड़ी है
चावल की छाँटे में
खरी बात जैसी है खरे
समय की चुप्पी

सुन लें
हर आहट उसकी
आसान नहीं है
जो उम्मीदों की टूटन
पहचान रही है
फिर भी गुमसुम है
नकचढ़े समय की चुप्पी ।

21.4.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भय के कारण

भय के कारण
तुम्हें प्यार से नहीं बुलाता मैं

चिड़िया की आँखों में
विस्मय की परछाई है
थथम-थथमकर चलती
थकुचाई पुरवाई है
बिढ़नी के छत्ते से
कैसे शहद चुआता मैं

इतने घने अंधेरे में
साँसें कुछ ढूँढ रहीं
मगर हाथ में अंधे के
आ सका बटेर नहीं
सर्द हथेली सटा
पेट से क्यों गर्माता मैं

नीली-नीली
रोशनियों की टूटीं उल्काएँ
सकते में आयी है
इतिहासों की संज्ञाएँ
जला नहीं
गीली लकड़ी-सा
रहा धुँआता मैं ।

24.4.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बुरे समय से

अपने सबसे बुरे समय से
चीजें गुजर रहीं

फूलों की पंखुड़ियाँ
नहीं सुरभि से सनी रहीं
ऊब, घुटन, कूढ़न की छतरी
ज्यादा तनी रही
सूनेपन की
खामोशी घर-घर में पसर रही

आतंकित हो
सिकुड़ गयी हैं हर घर की आँखें
आज तने से लगतीं जुदा
दरख्तों की शाखें
मौसम के पाँवों में
फटी बिवाई निखर रही

धधक रही
लकड़ी से ऊष्मा की उम्मीद नहीं
लहालोट खुशियाँ दे पातीं
होली-ईद नहीं
अगर पसीने-सी
लिलार से दहशत
टघर रही ।

26.4.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ब्याज-वसूली में

पसरा घर के
अन्दर-बाहर बियाबान-सा है

पत्ता खड़का
तो मन में कुछ बेचैनी फैली
हुई कुहासे और धुएँ से
नजरें मटमैली
ब्याज-वसूली में डर
दर छेंके पठान-सा है

कहीं नहीं आने-
जाने की हुई मनाही है
भूख-प्यास के लिए सिर्फ
हाँड़ी करखाही है
आँखों का हर सपना
खाली आसमान-सा है

कोई सुबह न अपनी
अपनी कोई शाम नहीं
दहशत में जीने की शर्तें
होतीं आम नहीं
उबल रहा
लेकिन मन में
कुछ-कुछ उफान-सा है।

29.4.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

है नहीं मुश्किल

है नहीं मुश्किल
समय को कैद करना आँकड़ों में

है बहुत मुश्किल
धुएँ में आँख खोले हुए रखना
बवण्डर में उड़ानों की पाँख
खोले हुए रखना
जब बँटे हों वृक्ष सारे
पत्तियाँ, टहनी, जड़ों में

है बहुत मुश्किल
अँधेरे की सुरंगें पार करना
निविड़ निद्रा से हजारों वर्ष की
औचक उबरना
नदी, निर्झर, झील
सागर का छिपाना जल घड़ों में

है बहुत मुश्किल
बचाए प्यार की उम्मीद रखना
चमचमाती कुल्हाड़ी से
अमन का पैगाम लिखना
यातना के बँट गए
अहसास भी छोटे-बड़ों में ।

1.5.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह दिन

सोचो, कैसा होगा वह दिन

चन्दन अगर चहकना भूले
गूलर हर मौसम में फूले
चरे घास बकरी-सा बाघिन

गोद भरी हो, किलक नहीं हो
मुस्कानों में पुलक नहीं हो
बदबू सूँघ नहीं आये घिन

आँखों में पहचान नहीं हो
पर के लिए उड़ान नहीं हो
बसे आस्तीनों में नागिन

रिश्तों में न मिले अपनापन
व्यर्थ लगें सारे सम्बोधन
हो निवाह मजबूरी लेकिन

डर हो सिर्फ, लिहाज नहीं हो
कल जैसा भी आज नहीं हो
हों साँसें लेना नामुमकिन

शेष न हों कोई उम्मीदें
स्वप्न बेच अहसास खरीदें
अर्थ शब्द के रहे न जामिन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तारीखें भी करें ठिठोली
खेलें फकत खून की होली
लगे जेठ जैसा ही आसिन ।

7.5.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हँसी आपकी

मुझको
सुनकर हँसी आपकी
डर लगता है

जब हँसते हैं आप
तीरगी बढ़ जाती है
दहशत से
कुदरत की आँख सिकुड़ जाती है
सन्नाटा भी हिलने इधर
उधर लगता है

सुनकर हँसी आपकी
हवा सहम जाती है
उड़ते वनपाखी की साँस
थथम जाती है
सकते में आया
हर गाँव-नगर लगता है

सुनकर हँसी आपकी
बच्चा डर जाता है
आसमान के मुँह का रंग
उतर जाता है
बेहद खतरे में
आ गया दहर लगता है ।

10.5.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चीजों पर पर्दा

इस अंधियारे में
मैं किस-किसकी पहचान करूँ

इस गाढ़े अंधियारे का
चीजों पर पर्दा है
पर्दे के अन्दर
चेहरे के ऊपर चेहरा है
ऐसे में कितना
किन चेहरों का गुणगान करूँ

पत्तों के झुरमुट में
प्यासी रूहें दुबकी हैं
पोखर के जल में बत्तख ने
मारी डुबकी है
बारूदी गंधों में
कितना गंगा-स्नान करूँ

अकस्मात ही भूल गए
सब पाठ पुराने हैं
परिवर्तित हो गए
शब्द के निश्चित माने हैं
क्यों पीड़ादायक
अर्थों का शर-संधान करूँ ।

12.5.06

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रुहचुह घर

इस नक्शे में
यहीं कहीं था अपना रुहचुह घर
बूढ़े बाबा माँग रहे मुझसे
इसका उत्तर

जिसके पोर-पोर में
चहक रही किलकारी थी
अंगड़ाई में गझिन प्यार की
गहन खुमारी थी
हो जाती सारी थकान थी
हवा जहाँ आकर

बरगद के नीचे
चौपाल हमेशा लगता था
होली, चैती, कजरी का
संगीत उमगता था
करमा, जितिया, तीज, छठी का
झरता था निर्झर

जहाँ फसल आते ही
जीवन पंख खुजाता था
और जनम ले पलता-फलता
रिश्ता-नाता था
निगल गया अलगंठ
इन्हें है लगता नया शहर ।

15.5.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँख के आगे

क्या-क्या बदला नहीं
आँख के आगे, देखो

वनफूलों के खिलने का मौसम बदला है
सर्दी, गर्मी, वर्षा का सरगम बदला है
हुई विषैली नदी
आँख के आगे, देखो

नयनों से बहते आँसू की भाषा बदली
सपने बदले, रिश्तों की परिभाषा बदली
कौन गलत, क्या सही
आँख के आगे, देखो

पेड़, वनस्पतियों का रंग, हरापन बदला
और प्यार का अनुमोदन, आकर्षण बदला
खतरे में है सदी
आँख के आगे, देखो

दुनिया बदली, दुनिया का नक्शा बदला है
उपनिवेश की अँखों-चढ़ा नशा बदला है
चटकी जालिम हँसी
आँख के आगे, दंखो।

18.5.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं आँखें चुराओ

कहो
कैसे हो
नहीं आँखें चुराओ

होंठ पर मुस्कान
आँखें डबडबाई
चीख कंठों में
अँड़सकर छटपटाई
आदतन मत हँसो
घावों को दिखाओ

क्या डरे हो
तेल पीती लाठियों से
पास बैठे रहबरों
सहपाठियों से
मुजरिमों की छाँह में
उत्सव मनाओ

भूख से मत
सिर्फ अपने से लड़ो तुम
लालटेनों में जलो
जिन्दा गड़ो तुम
जुल्म करके
जुल्म की जुल्मत हटाओ ।

20.5.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर-आँगन महका

धान पके खेतों में
घर-आँगन महका

दादी की आँखों में
नयी चमक आई
दादा की झुर्री की
रेघा कछुआई
अम्मा के गालों का
रंग अधिक टहका

भइया की मूँछें हैं
फड़क रहीं ज्यादा
भाभी की चूड़ी भी
खनक रही ज्यादा
अनब्याही बहना का
क्वाँरापन चहका

शायद फिर फूस ओढ़
इतराये छानी
लहना-रेहन का हो
किस्सा बेमानी
लगे नहीं फूले
अरमानों में गन्हका ।

22.5.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धरती का टुकड़ा

कितना व्यापक है
धरती का टुकड़ा छोटा-सा

जिस टुकड़े पर
रोज भोर की हँसी खिला करती
निर्विकार गरबइये की है
चोंच मिला करती
अंगड़ाई ले
पुरवाई अझुराती थोड़ा-सा

जिस टुकड़े पर
सपनों को आकार मिला करता
सृजनशील खुशबू को
सच्चा प्यार मिला करता
लोकगीत को मिलती
नूतन वस्तु, नयी भाषा

जिस टुकड़े पर
लामबंद अहसास हुआ करता
नयी सृष्टि को संकल्पित
इतिहास हुआ करता
एक राग में
बजते लोहा, टिन, पीतल, काँसा ।

२४-५-०३

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गुजरे घण्टे चार

गुजरे घण्टे चार
बिना आधी कप चाय पिए

आज सुबह से ही
आँखों में भरी खुमारी है
टूट रहा है बदन और
मन बेहद भारी है
टाल हुए
औचक ही जीवन के दोनों पहिए

मोटी फाइल के नीचे
अहसास दबे सारे
हम दौनी के बैल
घूमते, मगर न मुँह मारें
मौन रहें मत
जो कहना हो
जल्दी कहिए

उगे घमौरी जैसे
बच्चों के भोले ताने
चुभतीं पके मुँहासे-सी
घरनी की मुस्कानें
चलिए, उठिए
अब कुर्सी पर बैठे
मत रहिए ।

27.5.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह गीत

एक बार, हाँ, एक बार, वह गीत सुना दो

जो खेतों की फसलों में
हरियाली में है
ग्रामबधू के सिक्त
अधर की लाली में है
उतर धमनियों में तन-मन की थकन मिटा दो

जो बच्चों की
मुस्कानों की भाषा-सा है
माँ की आँखों में पुष्पित
अभिलाषा-सा है
चहक उठे भू-गगन भैरवी ऐसी गा दो

जो डबडबा रहीं आँखों का
रंग बदल दे
फूलों के खिलने
झरने का ढंग बदल दे
भीनी खुशबू से जग का कण-कण महका दो

जिसकी लय में
लहालोट अनुराग भरा हो
मुक्ति-समर में ध्वनित
प्रचण्ड विहाग भरा हो
बनके दिया अंधेरे का हर किला ढहा दो ।

29.5.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नदी-सा मन

नदी-तट पर भी न हासिल है नदी-सा मन

यह नदी है बह रही
अनवरत सदियों से
सीप, घोंघे, केकड़े हैं
इसी के पोसे
किसी भी जल-जीव से इसकी नहीं अनबन

नदी के तट पर बिचरते
गाय-लेरू हैं
पेड़ पर पाये वसेरा
वन-पखेरू हैं
नदी का यह चहकता तट है भरा आंगन

नदी के जल में लहर भी हैं
भँवर भी हैं
मछलियों को लीलनेवाले
मगर भी हैं
पर, नदी दे रही धरती को नया जीवन

हम नदी होते न, केवल
बात करते हैं
नाव लेकर नदी के जल में
उतरते हैं
नदी से महसूस करते हैं न अपनापन ।

2.6.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नाटक-घर में

बेहद सीलनभरी हवा है
गुमसाया है दिन
इस नाटक-घर में
साँसें लेना है बहुत कठिन

यहाँ नदीदा
बिल्ली की आँखों में है आक्रोश
सारे चूहे और चुटरियाँ हैं
भय से बेहोश
दगाबाज मौसम का चेहरा
तक हो रहा मलिन

उलटा लटके
चमगादड़ की उलट गयी है आँख
कोलतार से लिथड़ गयी है
गौरैये की पाँख
लेकिन दाना देख नहीं हो
लालच नामुमकिन

हाथों में रुद्राक्ष
और होंठों पर जै श्रीराम
आँखें करतीं धूर्त्त भेड़िये जैसा
अक्सर काम
बना हुआ है साँप नेवले का
सच्चा जामिन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पीकर तेल
करेगी लाठी लोकतंत्र की बात
शोर-शराबा, छल-फरेब से होगी
शह औ' मात

भैया, भाभी, साला, सरहज ही हैं
वाम-दहिन

मुर्दाघर में ही
जोशीले भाषण देते लोग
है अश्विनीकुमारों को लग गया
सार्स का रोग
रक्षा कैसे हो इस लू से
छतरी है कमसिन

नाचेगी राधा
चाहे हो पास न नौ मन तेल
नहीं चलेगा बहुत दिनों तक
लुकाछिपी का खेल
खुशबू आयेगी चन्दन को डँसे
भले नागिन

कब तक शोलों में
तब्दील नहीं होगी फरियाद
दिन-प्रति-दिन हो रहा कसैला
बिगड़े मुँह का स्वाद
धुआँ रही लकड़ी के अन्दर ही है
धधक गझिन ।

5.6.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोस्त बनकर

दोस्त बनकर वह
हमारे ही घरों को लूटता है

मानता हूँ-
बन्द सारी खिड़कियाँ थीं
नये घर की
पर, नहीं दुर्गन्ध कोई थी
वनैले जानवर की
व्यर्थ कहकर ही
सुखन के मंतरों को लूटता है

खोलनी थीं मुट्ठियाँ
पर, काट डाले हाथ उसने
क्रूरता-हैवानियत को दिया
अक्सर साथ उसने
नींद तो थी कैद में
अब बिस्तरों को लूटता है

तीरगी घर की छँटेगी
दे रहा हर दिन दिलासा
रोशनी फैली नहीं, हाँ, छा गया
गाढ़ा कुहासा
उड़ानें देकर
पखेरू के परों को खूँटता है ।

8.6.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह राह

यह राह
जहाँ तक जाती है
मैं जाऊँगा

यह राह गयी
घर, गाँवों और सिवानों तक
यह राह गयी है खेतों तक
खलिहानों तक
जो जहाँ मिलेगा
रोक वहीं बतियाऊँगा

यह बाग, बगीचे तक
निर्जन तक जाती है
यह चौराहे से
राजभवन तक जाती है
दफ्तर, संसद, न्यायालय तक
हो आऊँगा

इनके होंठों पर
लिखे हजारों नारे हैं
इनके रुख पर निर्भर
रहती सरकारें हैं
जो बुझी मशालें हैं
फिर उन्हें जलाऊँगा ।

11.6.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुशबू का सितार

बजा सुबह
मादक खुशबू का फिर सितार है

हरी दूब के कानों में
कह रही ओस है
झुण्ड नहीं चिड़ियों का यह
खानाबदोश है
अलसाई पुरवाई के
तन में खुमार है

कच्ची नींद जगी कलियों ने
ली अंगड़ाई
अनफूले कचनारों की
चूनर लहराई
हरसिंगार की आँख रही
पलकें पसार है

जीवन के रंगों से
गहगह आसमान है
गूँजा नये छंद, सुर, लय में
साम-गान है
उषा-सूक्त के होंठों पर
ऋत की पुकार है ।

14.6.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वसंत ने ली अँगड़ाई

बड़ी-बड़ी आँखों की
रसवन्ती पलकें महुआई
मुझे लगा उन्मन वसंत ने
ली खुलकर अँगड़ाई

कच्ची नींद जगी नरगिस की
पंखुड़ियाँ अगराई
गर्म हुई साँसों से
आँचल की हरकत अझुराई
चम्पक तन को
है गुदगुदा रही सस्मित पुरवाई

हँसी नहीं तुम
लाखों कलियाँ चटकीं कचनारों की
लगी झमकने झींसी खुशबू-भीगी
बौछारों की
सातों स्वर में गूँजी
चूड़ी-कंगन की शहनाई

मदिर छुअन मन के अँगन में
हैं भर रही कुलाँचें
मीठे सपनों के मृगछौने
हुलस-हुलसकर नाचें
दमकी कुदरत की चूनर पर
ताजा हुई कढ़ाई
हाँ, सचमुच उन्मन वसंत ने
ली खुलकर अँगड़ाई ।

16.6.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काश, गले मिलते

काश, गले मिलते हम-तुम निर्व्याज ईद में

जटिल समय में
जटिल बहुत हो गई समस्या
कसक रहे गुजरात, गोधरा
और अयोध्या
भीग पसीने से जाते हम निविड़ नींद में

मध्य हमारे
बैठ गया आतंक अचानक
चटक गये रिश्ते-नातों के
दर्पण औचक
शायद आया राहु, केतु, शनि एक सीध में

लगती कुशल-
क्षेम की चिन्ता अब बेमानी
सूखा भाईचारे की आँखों
का पानी
जहर मिला है खतोखिताबत की उम्मीद में

देखो, शैतानों के
घर हर दिन उत्सव है
डर से मौन हुआ मौसम
खग का कलरव है
शर्म शेष है गीत-गजल की, मगर, दीद में ।

20.6.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक ठण्डापन

एक ठण्डापन जेहन में आज उतराने लगा है

है किसे फुर्सत
निरख ले फूल का चुपचाप झरना
मिथुन पाखी के परों का पुलक के
फुलना-सिकुड़ना
साँझ में है देर अंधियारा मगर छाने लगा है

है न इतना वक्त
सूँघें रातरानी की महक भी
ध्यान से सुन लें कभी हम
सगुनपाखी की चहक भी
फिर तथागत के वचन का सत्य भरमाने लगा है

क्यों जरूरी है
कि देखें अँकुरना बोये बिये का
हवा से संघर्ष करना अनवरत
जलते दिये का
अब सुबह की हवा का स्पर्श खुजलाने लगा है

है मशालों में
दहन की अब नहीं सामर्थ्य कोई
आदमी की यातना का है न शायद
अर्थ कोई
टभकने नासूर का दुख दर्द सुहराने लगा है ।

23.6.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोशनी की खोज

सोचिए
किस दौर में हम आ गये हैं

थे कभी हम
भोर की मुस्कान जैसे
लोकगीतों की सहज
लय, तान जैसे
आज सूरज
देखकर चुँधिया गये हैं

रोशनी की
खोज में हम रत रहे हैं
हर सृजन के कंठ में
थिर कहकहे हैं
सूँघ
पछुवा की महक भकुआ गये हैं

चीखना अब
दर्द से अपराध होगा
तीरगी, आतंक का ही
राज होगा
बिना फूले
कहर कीकर ढा गये हैं ।

26.6.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रेशमी तिनके

देखिए, पतझर घरों में
हो गया दाखिल

जिन घरों में
आदमी हैं नहीं, बौने हैं
प्लास्टिक के रखे ताखे पर
खिलौने हैं
मुजरिमों की भीड़ ने
जज को कहा कातिल

गड़े फैली आँख में हैं
रेशमी तिनके
तेल पीती लाठियाँ
हैं भाग्य में जिनके
भैंस किसकी है-
नहीं है जानना मुश्किल

हर गली
हर सड़क पर
जारी नुमाइश है
खुशबुएँ नकली कहायें असल
-ख्वाहिश है
कत्लगाहों से
हुआ फर्मान है तामिल ।

२८-६-०३

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बदलती ऋतुएँ

हर किसी की आँख में
अब झाँकने की है मनाही

आँख, जिसमें
प्यार का सैलाब था हरदम उमड़ता
या किसी स्मृति का था मेघ
चौतरफा घुमड़ता
बदलती ऋतुएँ
निरन्तर दे रहीं जिसकी गवाही

आँख, जिसमें
गूँजता था गीत निर्मल सादगी का
ओस-धोये फूल की मुस्कान
जैसी ताजगी का
आज उसमें है भरी
देती दिखाई महज स्याही

आँख, जिसमें
थी कभी सच बोलने की जिद हठीली
हैं गहन आतंक से उनकी पुतलियाँ
आज पीली
अब मचायेगी न यह
सच बोलकर कोई तबाही ।

1.7.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोज होता हादसा

छगुनिए
क्या चैन से हैं
रात भर सोये कभी

क्या न घर-बाहर
अचानक रोज होता हादसा
क्या नहीं विपरीत लगती
ग्रहों की अक्सर दशा
क्या नदी है नहीं
बहकर दर्द अपना कह रही

देखिए, वनपाखियों की
आँख में है डर भरा
दरख्तों का हरापन भी
खौफ़ से है अधमरा
खोजिए, किस-किस जगह
है रंग पर ख़तरा नहीं

कल तलक जो शक्ल थी परिचित
हुई वह अजनबी
भार से गाढ़े कुहा के
हैं सभी चीजें दबी
क्या मिलीं सम्वेदनाएँ
हैं नहीं शोणित-सनी ।

4.7.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संभव है

पंख बिना भी
आसमान में उड़ना
संभव है

संभव है
अपनी छाया से आतंकित होना
दो जोड़ी आँखों को मिलते ही
शापित होना
सूखी हड्डी से भी
तेल निचुड़ना संभव है

संभव है कि
शबे-पूस में चले गरम आँधी
मुजरिम कहलाएँ ईसा, नानक
रहीम, गाँधी
उड़ती अफवाहों का
वापस मुड़ना संभव है

मगर असंभव है
कि कहीं रोशनी नहीं रहे
जुल्म सहें, चुप रहें, किसी से
कुछ भी नहीं कहें
दहशत से आँखों का
तनिक सिकुड़ना संभव है ।

8.7.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मत कहना

सुनो
मत कहना
अंधेरे को अंधेरा

दिख रही जो चीज
वह असली नहीं है
जो लगे नकली
वही नकली नहीं है
नाचता है
बीन सुनकर अब सपेरा

मौन ऋतु की
शिराओं में सनसनी है
आँख चुँधियाती जहाँ पर
रोशनी है
हो रहा है
फसल पर हावी उटेरा

कई हिस्सों में
हमारे घर बँटे हैं
उड़ रहे वनपाखियों के
पर कटे हैं
रात बीती
पर, कहाँ आया सवेरा ।

12.7.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अचानक

भूत, प्रेत, बैताल
नाचने लगे अचानक

हुआ अचानक इस दुनिया में ऐसा क्या है
कल काला था और आज भी तो काला है
कौन गलत, क्या सही
जाँचने लगे अचानक

जितने फूल खिले थे, उनमें गंध नहीं है
कविता--जिसमें अर्थ और लय-छंद नहीं है
कथा सभा में
काग बाँचने लगे अचानक

ये जंगल के गोह, थूककर डरा रहे हैं
जल के बाहर जल-जीवों को हरा रहे हैं
नश्तर से
नासूर पाछने लगे अचानक

ये कोल्हू के बैल इन्हें मत हल में जोतें
कटी पतंगों जैसी ये खायेंगे गोते
बिना जले ही
अवा आँचने लगे अचानक

इन्हें कहाँ फुर्सत कि पीर पराई जानें
अँधियारे में लिखें रोशनी के अफसाने
दहशत में
पैबंद टाँचने लगे अचानक ।
15.7.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय की नदी में

है बहुत मुश्किल
समय की इस नदी में अब नहाना

इस नदी में सिर्फ बालू-रेत ही हैं
जल नहीं है
सीप, घोंघे, मछलियों की
तनिक भी हलचल नहीं है
सोचिए, कितना कठिन है
आग पीकर मुस्कुराना

कट रहे हैं पेड़
जंगल की हुई वीरान आँखें
वनपखेरू कहाँ खोलें
गीत की उन्मुक्त पाँखें
घोंसला फिर से
बनाये किस जगह पंछी सयाना

खून पीने की लगी है होड़
देखें, रहबरों में
कत्ल की साजिश
रची जाती यहाँ पूजाघरों में
चाहिए उम्मीद को भी
साँस लेने का वहाना ।

19.7.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उड़ान तो है

पंख नुचे हैं
डैनों में लेकिन उड़ान तो है

पेड़ों में जीवित हैं
उम्मीदें हरियाली की
पके बिदाने के उर में
मुस्कानें लाली की
जगह न है धरती पर
खाली आसमान तो है

चिड़िया को कब
चिन्ता होती खोने-पाने की
उसकी तो जिद है दुनिया को
गीत सुनाने की
पथ में आते-जाते
राही के निशान तो हैं

गालों पर बैठी
मक्खी को सहज उड़ाना है
मगर कठिन उम्मीदों का
अस्तित्व बचाना है
रातें लम्बी हैं
लेकिन संभव विहान तो है ।

22.7.02

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहली वर्षा से

मन-मिजाज मौसम का बदला
पहली वर्षा से

गुस्से से जल रही
हवा का गुस्सा शांत हुआ
नतमस्तक पुरवा के आगे
हुई गरम पछुआ
बना पवन ममता का पुतला
पहली वर्षा से

वनपाखी की चिन्तित
आँखों का डर दूर हुआ
गाछ, लता, वनफूलों का हर
दुख काफूर हुआ
'धन्यवाद' सर-मुख से निकला
पहली वर्षा से

खेतों में हँस रही
दरारों ने मुँह बिचकाये
झुलस गयी घासों में
सपनों के अंकुर आये
गया प्रेम धरती का उपला
पहली वर्षा से ।

25.7.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हँसने की मजबूरी

डबकौहाँ आँखों में हँसने की मजबूरी है

दुनिया बदली
चीजों की पहचानें बदली हैं
नहीं नदी में, एक्यूरियम में
पलती मछली है
मगर नीर मछली की खातिर बहुत जरूरी है

ढाई अक्षर की
भाषा बदली, बदले नाते
दिन-प्रति-दिन लम्बी होती जातीं
काली रातें
आदमीयत की शेष महज अब खानापूरी है

छल-फरेब की झलक
मिली कंगन-पायल में भी
धब्बे दिखे कई माताओं के
आँचल में भी
बढ़ती ही जाती हाथों से मुँह की दूरी है

कविता में लय-छंद नहीं
शब्दों में अर्थ नहीं
नासूरों को नहीं चीरने की
सामर्थ्य रही
लोकतंत्र के सिंहासन का राग 'हुजूरी' है ।

27.7.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चेहरा बदला है

सोच-समझकर मैंने अपना चेहरा बदला है

कल तक जो चेहरा था, वह हो गया पुराना था
ऊब, घुटन, टूटन का
जख्म-भरा अफसाना था
था अनाज वह, जिसमें स्वाद नहीं अब पहला है

उस चेहरे पर धब्बे काले उगे हजारों थे
गुत्थमगुत्था शब्द
लिखे थे बासी नारों के
इस चेहरे का दमक रहा सौन्दर्य सुनहला है

इस चेहरे में कूट-कूटकर भरी शरारत है
होंठों की मुस्कानों की
पहचान कयामत है
आँखों की गहराई देख समन्दर दहला है

इसको हँसते देख वक्त का जिस्म सिहर जाता
रोम-रोम में सम्मोहन का
जहर उतर जाता
आव निरख दुनिया का विजन हुआ कुछ धुँधला है ।

30.7.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फूलों से बात

गंधों की भाषा में ही
फूलों से बात करें

फूल बहुत नाखुश दिखते हैं
बदले मौसम से
ये खुशबू का पता पूछते हैं
तुम से, हम से
दबे पाँव ही अंतरंग में
बागों के उतरें

डर है
गुलची की आँखों की
नींद न उड़ जाये
बुलबुल के स्वर की मिठास ही
नहीं निचुड़ जाये
आँधी आने के पहले
आँधी से नहीं डरें

अलसाई कलियों ने फिर से
ली है अंगड़ाई
जिसे देख ऋतु की
विस्मित आँखें भी महुआई
एक जगह पर नहीं
हवा के पाँव कभी ठहरे ।

5.8.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कह न सकता

आप हैं कितने जटिल
मैं कह न सकता

क्षीरसागर में
नहाते कल तलक थे
घूमने जाते वनों में
दूर तक थे
मैं नदी के साथ
अविरल बह न सकता

लोढ़ने हम
फूल निकले बाग में थे
एक जैसे ही झुलसते
आग में थे
अब तपिश लू की
अकेले सह न सकता

वनपखेरू की तरह
जीना कठिन है
अब उलटबाँसी
समझ पाता न दिन है
कस्तूरी मृग-सा
भटकते रह न सकता ।

8.8.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दोनों तटों पर

नदी के दोनों तटों पर
बराबर जल-धार लिखना
रात के तन पर सुबह का उजाला
हर बार लिखना

आँख में सपने, अधर पर मखमली मुस्कान लिखना
खुशबुओं के छंद में वनफूल का आख्यान लिखना
बुझे चूल्हों के बदन पर दहकता
अंगार लिखना

दरख्तों की पत्तियों पर हरेपन की गजल लिखना
चहचहाता गाँव लिखना, लहलहाती फसल लिखना
वनपखेरू के नयन में प्राकृतिक
अभिसार लिखना

क्षीरमुख शिशु-होंठ पर ही स्तनित स्पर्श लिखना
चुहचुहाये पसीने से सृजन का उत्कर्ष लिखना
जेठ की तपती धरा पर सावनी
बौछार लिखना

मत लिखो गुजरात बर्बर, अयोध्या भी नहीं लिखना
लिखो जश्ने-गोधरा मत, बामियाँ भी नहीं लिखना
नहीं चीखों-आँसुओं से किसी के
त्योहार लिखना ।

10.8.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्या करें

हो गया भूगोल को ही
अगर सन्निपात तो हम क्या करें
जो मिले थे गले, करने लगें भीतरघात
तो हम क्या करें

आँख में है प्यार
होंठों पर खिली मुस्कान, हाथों में छुरी
खेलने होली लगी चौतरफ देखें
यहाँ शक्ति आसुरी
बाग की खुशबू चुरा ले हपस
झंझावात तो हम क्या करें

है यहाँ तट तोड़कर
बहने लगी तेजाब की अल्हड़ नदी
यंत्रणादायक किसे महसूस होगी
नहीं ऐसी त्रासदी
यह सदी आयी लिए आतंक की
सौगात तो हम क्या करें

है मशालों में नहीं वह तेज
कि हर ले सुलगकर तम सघन
रात काली कर रही दिन के उजालों पर
भयानक आक्रमण
याद की छाया-तले झुलसें अगर
जज्बात तो हम क्या करें ।

13.8.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सपनों के महल

सपने ही करते सपनों के महल खड़े

इन सपनों की
बहुत अजीब कहानी है
कुछ झपकी लेते तो
कुछ बेपानी हैं
कुछ मासूम, मुलायम हैं, कुछ गले-सड़े

कुछ सपने
मुस्काते सुन्दरियों जैसे
धमाचौकड़ी करते कुछ
परियों जैसे
कुछ हैं प्यार जताते, कुछ करते झगड़े

कुछ सपनों के
हाथ खून में डूबे हैं
कुछ के आसमान छूते
मन्सूबे हैं
कुछ पच्छिमी हवा की हैं अँगुली पकड़े

कुछ सपनों की
आँख हरी, कुछ की काली
कुछ की आँख कंजी, कुछ में
झलकी लाली
कुछ आँखों में हैं खुशनुमा विहान जड़े ।

17.8.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक चुटकी धूप

एक चुटकी धूप लेकर
आप क्यों आये

किस जगह पर
खिला धूसर-सा अंधेरा है
दरख्तों की छाल में
दुबका सवेरा है
यह तपिश भी
गर्म आटे की न खो जाये

थरथराती रोशनी
कन्दील की
डर से
निकलते भयभीत हो
बच्चे नहीं घर से
खबर-सी आयी उदासी
अधिक गहराये

चापलूसी में
अगर हो लिप्त हर मौसम
आदमी होना नहीं है
यातना से कम
स्मृति अहसास को
घुन की तरह खाये ।

20.8.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पता लगा लो

किसका खूँटा कहाँ गड़ा है
पता लगा लो

कौन न है दहशत में, किसके अधर भिंचे हैं
छलक रहे आँसू से किसके नयन मिचे हैं
और कौन चुपचाप खड़ा है
पता लगा लो

किसके चेहरे पर आतंक नहीं फैला है
किस कपड़े का जिस्म नहीं होता मैला है
किसका बदन नहीं अँकड़ा है
पता लगा लो

किस चिड़िया के पंख नुचे पहली उड़ान में
सनक नहीं होती किस दुनिया के विहान में
कौन गाँव बसकर उजड़ा है
पता लगा लो

कौन अंधेरे घर में दिया जला जाता है
विश्वग्राम में किसको नहीं छला जाता है
किससे किसका मान बढ़ा है
पता लगा लो ।

22.8.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नयी सदी में

नयी सदी में
मुश्किल आदमकद होना है

जितना ऊँचा कद
गर्दन उतनी ही नत है
दौलत जिसके पास
उसी के हेतु बचत है
जिनके खाली हाथ
उन्हें पड़ता रोना है

खबरें होती हैं
अखबारों में बौनों की
होतीं नहीं कुलाँचें
चंचल मृगछौनों की
अब खुशबू से
रिक्त बाग का हर कोना है

जोकर ही हैं
सूत्रधार इस नाटक-घर के
जो अक्सरहा अभिनय
करते जादूगर के
लेकिन कठिन न
इनकी सही नब्ज टोना है ।

25.8.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माहौल नहीं बदला

दुनिया बदली, पर घर का माहौल नहीं बदला

नूनी खायी दीवारों में
सीलन का घर है
खूसे हुए धरन पर
बोझ टिकाये छप्पर है
आँधी के भय से दरवाजे का किवाड़ दहला

चिढ़ा रही मुँह दालानों के
खड़ी बैल गाड़ी
खलिहानों का बनी
दिठौना करखाही हाँड़ी
दाने की खातिर गरबइया भी खाये टपला

कभी बाढ़, सूखा, अकाल
तो है भुखमरी कभी
कभी हाट-बाजार
कभी थाना, कचहरी कभी
बढ़े कर्ज ने दिये स्वप्न के सारे बाग जला

पत्नी की उजड़ी मुस्कान
टभकती है मन में
बच्चों की जिद अब
गुदगुदी नहीं करती तन में
दुनियादारी की भट्ठी में क्या-क्या नहीं गला ।

31.8.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक डर

एक डर
पूरी सदी की आँख में
पसरा हुआ है

थी जहाँ कल धूप
फैला है वहीं भूरा अंधेरा
मिला बीते हुए दिन की
स्मृति जैसा सवेरा
सोचिए
क्या नहीं सन्नाटा
अधिक गहरा हुआ है

इस जगह फिर
भाव ऊँचे हो रहे बैसाखियों के
घोंसले कोई सुरक्षित अब न हैं
वनपाखियों के
बिना बाँधे जल नदी का
लग रहा ठहरा हुआ है

जागना यह सोच
वन का हरापन चूसे न कोई
टहनियों पर पत्तियों की
थिरक को मूसे न कोई
हों नहीं हैरान
क्यों मुँह वक्त का उतरा हुआ है ।

3.9.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

युग की नदी में

मैं बहा
युग की नदी में नाव जैसा

नदी में
सैलाब का पानी भरा है
छटपटाती प्यास से लेकिन
धरा है
यह समय है
युधिष्ठिर के दाँव जैसा

तेज आँधी है
टहनियाँ काँपती हैं
घोंसलों में कैद दुनिया
काँपती है
काँपता घर
बाढ़-पीड़ित गाँव जैसा

क्या पता
कब तक अंधेरा यह हटेगा
बेसबर आतंक का
कुहरा छँटेगा
गम धुआँता
अधजले आलाव जैसा ।

5.9.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बदले समय का चेहरा

बदले हुए समय का चेहरा
बदल रहा हर पल

झील जहाँ थी कल
अब रेगिस्तान वहीं पर है
जहाँ शोर था, हलचल थी
सुनसान वहीं पर है
घर के पीछे खाई
आगे है भीषण दलदल

खिले गुलाबों का
खुशबू से है सम्बन्ध नहीं
जैसे कविता में होते अब तुक
लय, छन्द नहीं
पूजाघर में
पापधुनों पर थिरक रही पायल

होड़ लगी है
जल्दी से सब कुछ पा जाने की
यहाँ किसे फुर्सत है मिल-जुलकर
बतियाने की
टाट किसी को नहीं
चाहिए हर जन को मखमल ।

8.9.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दुनिया सो रही है

हम कुएँ के जगत पर बैठें
पसारें पाँव, दुनिया सो रही है

हम शहर से लौट आये
बिना कुछ पाये
मिले चेहरे अजनबी
अनमने, ठिसुआये
ढूँढिए सूखी नदी में
रेत के गिर्दाव, दुनिया सो रही है

खुशबुएँ आतीं न अब
खुशबाश बागों से
दोस्ती की आस्तीं में
छिपे नागों से
छटपटाते, उड़ न पाते
परकटे सुर्खाब, दुनिया सो रही है

हैं दरींचे बन्द
ठकुआये हुए घर के
देखिए, लगने लगे हैं
जोंक पत्थर में
है नहीं खाली समय का
गया कोई दाँव, दुनिया सो रही है ।

12.9.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनकी चतुराई

भाई, उनकी चतुराई के
क्या कहने हैं

वे गाते हैं
युद्धगीत भी पूजाघर में
काँप रहे नन्हें बच्चे जैसा
हम डर से
नहीं बाढ़ में
शीर्ण नाव लेकर बहने हैं

अर्थ बदल देते
हाथों की रेखाओं का
दुनिया खो जाती तंद्रिल
आँखों से धोखा
दर्द हमें पड़ते
जिसके कारण सहने हैं

चुटकी भर देते
ले लेते हैं खाँची भर
चाहे कोई प्यार करे
या मारे पत्थर
शायद कवच अभेद्य
इन्होंने फिर पहने हैं ।

15.9.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सपनों के व्यापारी

हाँ, वे झूठे
सपनों के सच्चे व्यापारी हैं

उनके चेहरे पर सुर्खी है
खिले गुलाबों की
आँखों में मासूम सरलता
है सुर्खाबों की
होंठों की
मुस्कानों की हरकत दोधारी है

वे सपनों की खातिर
करते हैं अपराध कई
लेकिन भय से हैं दुनिया की
नजरें झुकी हुई
इनके घर से
निकली सब राहें हत्यारी हैं

वे उड़ान देते हैं
लेकिन पंख कतर लेते
बारूदों-लाशों से नीड़
समूचा भर देते
हर वनपाखी को
धमकाते बारी-बारी हैं ।

19.9.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कठिन समय में

कठिन समय में
बहुत कठिन है खुलकर हँसना

अंधियारा पसरा
चीजें बिखरी हैं घर में
चूहे हैं खामोश, डरी
बिल्ली के डर से
इस संकट में
भूल गया है मेघ बरसना

रिश्ता नहीं रहा
चिड़ियों का आसमान से
बेचैनी झर रही दरख्तों के
वितान से
खुशबू नहीं
चाहती मलयानिल में बसना

उड़ो, अधिक मत उड़ो
दिशाएँ भरमायेंगी
उमस बहुत है
शायद अब आँधी आयेगी
आँधी के आगे
बनकर दीवार अँड़सना ।

24.9.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रेत में खोई नदी

सोचिए कैसे कहाँ
क्यों रेत में खोई नदी है

फूल जितने भी खिले थे
नोच डाले आँधियों ने
बाढ़ आयी, जो बचे थे शेष
उन सबको डुबोने
प्रार्थना के शिल्प में
कुछ कह रही घायल सदी है

सिर्फ हम-तुम
यातना की तपिश को पहचानते हैं
भेड़िया किस शक्ल में है छिपा
यह भी जानते हैं
बनी रक्षा-कवच
जिसके लिए बहसें संसदी हैं

शब्द के अब अर्थ को
मुश्किल बचाना हो रहा है
अर्थ अपनी अस्मिता, अहसास
हर पल खो रहा है
एक साँचे में ढली
लगती यहाँ नेकी-बदी है।

26.9.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घर का पता

घर के अन्दर ही है
घर का पता-ठिकाना

पूरी धरती घर है
इस घर में जीवन है
आँखों में सपने, सपनों में
स्पन्दन है
होंठों पर है
आदिम राग-भरा अफसाना

जिसमें आते ही
होती चिंता छू-मंतर
जिसकी साँस-साँस में
धड़क रहा मनवंतर
दिन में रहो जहाँ भी
साँझ-ढले घर आना

इसकी स्निग्ध हँसी
दुनिया भर की कविता है
यह सुख का उल्लास
दुखों के लिए चिता है
बहुत कठिन है
इस घर की पहचान बचाना ।

29.9.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुद्दा नहीं है

भरे घावों को रहे हम छील, यह मुद्दा नहीं है
तलफलाई यातना की झील, यह मुद्दा नहीं है

आँख में वनपाखियों की आज फिर दहशत भरी है
जिन्दगी की धूप चौखट पार
क्यों औंधे पड़ी है
पके बालों में भरे हैं ढील, यह मुद्दा नहीं है

गाँव से भयभीत खेतों तक गई पगडण्डियाँ हैं
नये मूल्यों के सृजन में
रत सियासी मण्डियाँ हैं
लिपे आंगन में भरे हैं हील, यह मुद्दा नहीं है

आत्महत्या को विवश दहकान का पैगाम क्या है
यह अयोध्या, गोधरा, गुजरात
अक्षरधाम क्या है
आग में केसर हुआ तब्दील, यह मुद्दा नहीं है

क्यों सुनाई नहीं देती अब दिलों की धड़कनें हैं
बदल लेते क्यों अचानक
शब्द अपने मायने हैं
कर रहा है कौन आटा गील, यह मुद्दा नहीं है

खुली खिड़की से हवा आयी फफूंदों से भरी है
पूर्व बुझने के दिया को
मिली तेजी आखिरी है
ठुकेगी ताबूत की हर कील, यह मुद्दा नहीं है
कब जलेगी मुक्ति की कंदील, यह मुद्दा नहीं है ।

2.10.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पत्ते-से हरे दिन

खूशनुमा हैं
हरे पत्ते-से हरे दिन

मुस्कुराकर सुबह
अंगड़ाने लगी है
खुशबुओं के गीत
फिर गाने लगी है
होंठ पर धर होंठ
फिर गीला करे दिन

दोपहर की आँख में
सपने नये हैं
ग्रामबधू की
धड़कनों-से हो गये हैं
आस्था-अहसास में
हरकत भरे दिन

साँझ को वन-
पाखियों के संग लौटे
जब जगें चूल्हे, कड़ाही
औ' छनौटे
मोरपंखों की
रुबाई-सा झरे दिन ।

6.10.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह घर

यह घर
जिससे होना अलग
बहुत होता मुश्किल

घर, जिसमें
खुशबू है प्यारभरी अँगड़ाई की
छुअन टभकते जख्मों की
दुखहरण दवाई की
आने से जिस जगह
सहमते अपराधी, कातिल

घर के भीतर
गूँज रही उजली किलकारी है
मह-मह महक रही मीठे
सपनों की क्यारी है
जहाँ सरस गीतों के
पंख खोल उड़ते हारिल

घर ही होता
सच्ची परिभाषा आजादी की
लामबंद हुंकार मुक्ति की
सही मुनादी की
घर ही है पहचान
हुआ क्या जीवन में हासिल ।

8.10.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मैं कैसे बदलूँ

मैं कैसे बदलूँ
जैसे दिन रोज बदलता है

रोज बदल जाती
जैसे कैलेण्डर की तारीख
राजभवन की अक्सरहा
बदला करती है सीख
रंग बदलते
मौसम से मन बहुत दहलता है

खरबूजे को देख
बदल लेता खरबूजा रंग
जगह बदलते ही गिरगिट का
होता दूजा रंग
कहीं बरसते मेघ
कहीं पर भूतल जलता है

बदली हुई हवा के
रुख की हो पहले पहचान
और नदी की गहराई का
थोड़ा भी अनुमान
सोचे-समझे बिना
वनों में कौन टहलता है ।

11.10.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कटीं न रातें काली

हवा ओढ़ ली
रात बिछा ली
लेकिन कटीं न रातें काली

चौड़ा पाट
नदी गहरी है
तेज धार
जल-बीच तरी है
चंचल गति की थाह
लगा ली

कुहरा घना
घनी बदली है
चमक रही
रह-रह बिजली है
अंधकार के हाथ
भुजाली

दीख रहे
हैं दिन में तारे
घूम रहे कातिल
हत्यारे
आजादी की कथा
सुना दी ।

14.10.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गहन उमस

गहन उमस
होती है आँधी आने का संकेत

किसलय की लाली ही है
हरियाली का संदेश
गुस्से का आना
आँखों में लाली का संदेश
बहती हुई हवा होती है
दुनिया में अनिकेत

माथे से चू रहा पसीना ही
बनता है अन्न
जल देकर ही सागर
होता है जल से सम्पन्न
पर्वत है तो निश्चित ही
उपजेंगे कंकड़-रेत

अंधकार जिस जगह
वहीं पर अक्सर जलते दीप
मोती वहाँ नहीं होते
जिस जगह न होते सीप
बदल रहा रुख गर्म हवा का
हम क्यों रहें अचेत ।

17.10.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मतलब की भाषा

तेज धूप की तरह खिली है
मतलब की भाषा
मेरी-तेरी, इनकी-उनकी
हम-सब की भाषा

बदल चुकी है परिभाषा
मूल्यों की, नारे की
गुम होतीं रोशनियों की
फैले अंधियारे की
जलकुम्भी-सी पसर रही है
मजहब की भाषा

अपराधी से, हत्यारों से
रिश्तेदारी है
दंगे में, अपहरण-लूट में
हिस्सेदारी है
तब की जो भाषा थी
रही नहीं अब की भाषा

देशभक्त है वह
जिसने सत्ता हथियाई है
जिसे देख पानी-पानी
हो रहा कसाई है
कथा-कहानी तक सीमित है
अब रब की भाषा ।

20.10.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रोशनी से डर

कौन है जो
डर रहा है रोशनी से

वह अंधेरे में
रहा करता सदा है
स्वयं की पदचाप से
डरता सदा है
ख्वाब को भी
काटता है सरजमीं से

अबाबीलों पर
झपटता चील जैसा
कैद करता अर्थ को
तहबील जैसा
किन्तु, हो जाते
फफोले चाँदनी से

क्रूर-हिंसक
वह बना देता हवा को
जहर में तब्दील कर
देता दवा को
आदमी को
है लड़ाता आदमी से ।

24.10.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कहीं तीखी धूप

कहीं तीखी धूप
छाये घन कहीं पर हैं
कहीं कादो-कीच तो
चन्दन कहीं पर हैं

फूल की खुशबू
कहीं है चुभन काँटे की
प्यार की थपकी कहीं तो
जलन चाँटे की
हैं कहीं बहुगुणा
वीरप्पन कहीं पर है

कहीं पाखी
घोंसले में पंख मोड़े हैं
बाज के भय से कई
डैने सिकोड़े हैं
भूख है तो
छत्तीसों व्यंजन कहीं पर हैं

कहीं होली, ईद
बैसाखी कहीं पर है
कहीं जितिया, तीज है
राखी कहीं पर है
पाण्डवाणी
गा रही तीजन कहीं पर है ।

28.10.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क्रुद्ध झंझावात

चीखकर मत बोलना
हम लोग हैं बहरे नहीं

हम नदी में
बह रहा अनवरत पानी हैं
गीत हैं, संगीत हैं, कविता
कहानी हैं
थाह लो चाहत अगर हो
हैं अधिक गहरे नहीं

है सदा हमने
गढ़ी सौन्दर्य की भाषा
हर नयन में आँज जिन्दा
स्वप्न या आशा
हैं हवा वह जो कभी भी
इक जगह ठहरे नहीं

संगठित होकर
हवा का रुख बदल देते हमीं
आँधियों के वेग को विश्वास
बल देते नहीं
क्रुद्ध झंझावात के
भय से कभी हहरे नहीं ।

2.11.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हलचल हवा की

चलो, हम
पहचान लें हलचल हवा की

इस हवा के
फेफड़े में है नहीं क्या
होंठ पर गुजरात, आँखों में
अयोध्या
गोधरा भी है
कड़ी वहशी कथा की

उत्सवों के रंग
मैले हो गये क्यों
आदमी इतने वनैले
हो गये क्यों
जो गजल
गाने लगे हैं यातना की

सुबह देती
लालिमा सबको बराबर
एक जैसा रंग रचता
है महावर
एक-सी है
इबादत ईश्वर-खुदा की ।

6.11.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घाव पर चीरा

आँधियाँ आईं
अचानक थम गईं

जल रहे थे
अब बुझे आलाव हैं
छटपटाते परकटे
सुर्खाब हैं
सर्द चुप्पी
हर अधर पर जम गई

घोंसले उजड़े
परिन्दे मौन हैं
सोच, दहशत में
न जीता कौन है
रुख हवा का
डरी चिड़िया गम गई

है अंधेरा
तो जलेगी रोशनी
घाव पर चीरा करेगी
नरहनी
अगर शोलों में
बदल शबनम गई ।

9.11.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
आज फिर गले मिले हम

यह दिन है
सहमा इराक-सा
लुटा, पिटा, सहमा
अवाक-सा
धुआँ रहे हैं
भीतर-भीतर बिना जले हम

रुँधे कंठ में
अँड़स गया क्या
फाँस बना गुजरात
अयोध्या
बनकर अक्षरधाम
गोधरा नहीं खिलें हम

मिलें फूल
औ' खुशबू जैसा
दिखें खुशी के
आँसू जैसा
रहें न मन में
बनकर शिकवे और गिले हम ।

16.11.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय ठहाका मार हँसेगा

पत्ते गिरे कई
बसरा-बगदाद में
समय ठहाका मार
हँसेगा बाद में

तड़के छत पर
सोनचिरैया बोल गई
गिरह पुरानी स्मृतियों की
खोल गई
चहक घोल देगी
यह गहन विषाद में

अबाबील पर
झपट रहीं काली चीलें
विष पीने से होंठ हुए
दिन के नीले
चीख घुली
झरनों के मधुर निनाद में

नाउम्मीदी
फिर सपनों से होड़ न ले
फौलादों-सी टाँठ रीढ़ को
तोड़ न दे
दीमक लगे नहीं
घर की बुनियाद में ।

20.11.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तब्दीलियों का रंग

हो रही तब्दीलियों का रंग पहचानें

चीज में तब्दील
अब होने लगे रिश्ते
अजनबी हो गए हैं सारे
सगे रिश्ते
खिल नहीं पातीं अधर पर सहज मुस्कानें

पर कतर डाले
गये हैं वनपखेरू के
बँधे हैं थुथने सभी
नवजात लेरू के
हो गये रूपान्तरित हैं शब्द के माने

जिन्दगी भर की
कमाई सिर्फ खोंची है
चील ने फिर खंजनों को
धर दबोची है
इसलिए हर वस्तु घर की लगी टकराने

गड़े काँटे कई
छाले भरे पाँवों में
है नहीं ऊष्मा धुआँ
देते अलावों में
भूल हम जायें न, लेकिन मुक्ति के गाने।

26.11.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दृश्य नहीं थिर

दृश्य आँख में एक नहीं थिर

चिन्दी-चिन्दी
हुआ समय है
कविता छन्दहीन
निर्लय है
लक्ष्य बिना चल रहा मुसाफिर

दुनिया इतनी
बुरी नहीं है
सिर्फ एड्स-सी
डरा रही है
हम देसी, तुम सभी मुहाजिर

सपने:
पत्ते तीन ढाक के
या हैं उखड़े बाल
नाक के
तड़प रहा है लोथ बिना सिर

यह अंधियारा
बहुत घना है
मगर जलाना दिया
मना है
गर्म हवाएँ भी हैं मुखबिर ।

29.11.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टूट का अन्तःकरण

आदमी की
टूट का अन्तःकरण पढ़ लूँ

आदमी ने
आदमी को है नहीं जाना
कौन है किस शक्ल में
यह नहीं पहचाना
हर पखेरू के परों का
संचरण पढ़ लूँ

टेकता घुटने
कभी आँखें दिखाता है
आदमी ही आदमी को
नोच खाता है
आ रहा हर रीढ़ में
वह अन्तरण पढ़ लूँ

आदमी इतिहास लिखता
आदमी का है
सभ्यता की आँख
सपना रोशनी का है
ऊब के रूपान्तरण का
व्याकरण पढ़ लूँ ।

2.12.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भयानक साँप

पाँव के नीचे भयानक साँप आया

रास्ता है उबड़-खाबड़, है अंधेरा
नजर में है
    मृगतृषा जैसा सवेरा
कंठ में ले खुसखुसी आलाप आया

जाल है बेहद सुनहरा, फँस गए हम
नींद रेहन हुई
    गिरवीं साँस-सरगम
चाह थी वरदान की, अभिशाप पाया

होंठ से रूठी खुशी की मुस्कुराहट
आँख में होती न
    सपनों की बुनावट
रावणों के हाथ शिव का चाप आया

फूल ढेरों खिले, पर खुशबू नहीं है
आर्द्र आँखें हैं
    मगर आँसू नहीं है
घर-जमाई की तरह संताप आया ।

6.12.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आया पछुआ

उमस लिए आया पछुआ है

खुली हुई खिड़की से आकर
धुंध, धुआँ, बदबू
फैलाकर
नाच रहा उन्मन नेटुआ है

जाल बिछाये है सरमाया
घर-आँगन
हो गया पराया
रहा अमन का तन टउआ है

बिगड़े मुँह में स्वाद न होगा
मौसम से संवाद
न होगा
कोथा अगर हुआ चहुआ है

सपना सपना हो जायेगा
हर अपनापन
खो जायेगा
ठहरा समय रहा ठिसुआ है ।

10.12.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुबह की चाय

क्या जानें , क्यों मीठी लगती
नहीं सुबह की चाय

लेकर अच्छी खबर नहीं आते कोई अखबार
कौन गिरा औंधे मुँह, किसकी उलट गयी सरकार
शायद भूल गयी है देना
दूध दुधारू गाय

सारे रिश्ते-नातों की है बेगानी मुस्कान
चार हुई आँखों की भी है हर पुतली वीरान
बता रहे सब छल-फरेब के
ढेरों नये उपाय

इस बगिया के लिए न मौसम है शायद माकूल
खिले गुलाब कहाँ से, रोपे जायें अगर बबूल
इस पतझर के आगे हैं वन
गाछ, लता, असहाय

खेल रहे हैं गिद्ध-भेड़िए लुकाछिपी का खेल
नाचेगी राधा कैसे, है पास न नौ मन तेल
चैन टिकेगा कहाँ हड्डियाँ
सारी अगर पिराय ।

15.12.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तस्वीरें बोल रहीं

घर में टँगी हुई तस्वीरें
बोल रहीं

लगीं खँरोंचें
कितनी इनके आमुख में
और गया घोला विषाद
ठोहर सुख में
उलझी गिरह यातनाओं की
खोल रहीं

भूखे पेट पड़ा
कब-कब इनको सोना
हँसते-हँसते पड़ा इन्हें
कैसे रोना
सुखद दिनों की खाली जेब
टटोल रहीं

कितनी बार
छला है झूठे बहुमत ने
नन्हीं जान फँसी है कब-
कब साँसत में
अब इन बातों का है कोई
मोल नहीं।

22.12.03

अक्षरा फाउण्डेशन
मांगल्य हाउस, कोलाबा कॉजवे
मुम्बई, द्वारा प्रदत्त
उपहार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Fou... 2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रंग बदलना सीखो

जीना है, तो हर पल रंग बदलना सीखो, भइया
जिद में बच्चे जैसा नहीं मचलना सीखो, भइया

राजा के नंगेपन को
तुम कहो नहीं नंगापन
करो सयाने लोगों की चुप्पी
का ही अनुधावन
काँटों-भरी राह में बचकर चलना सीखो, भइया

अग्रज बतलाना
शातिर अपराधी, हत्यारों को
रिश्तेदार बताना तस्कर
डाकू, बटमारों को
अपने और पराये, सबको छलना सीखो, भइया

गंगा उलटी है तो
तुमको उलटा बहना होगा
सुखकर कच्ची लकड़ी जैसा
नहीं उलहना होगा
पाकर आँच मोम जैसा ही गलना सीखो, भइया

यह दुनिया टेढ़ी है
तो टेढ़ा ही होना होगा
बरस रहे ओलों में नहीं
चैन से सोना होगा
जैसा साँचा हो वैसा ही ढलना सीखो, भइया ।

28.12.03

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
है कि साम्राज्यवादी संस्कृतियाँ अपना प्रभुत्व कायम करने के लिए देशज संस्कृतियों को विकृत, तनावग्रस्त, कुण्ठित और प्रदूषित बनाकर निष्क्रिय कर देती हैं। ऐसी स्थिति में विदेशी संस्कृतियों के हमले का सार्थक प्रतिरोध देशज संस्कृति के माध्यम से ही संभव है । नचिकेता को इस सूक्ष्म रहस्य का अहसास है और वह अपने रचनाकार के धर्म-निर्वहन में निष्णात हैं । 'रेत में खोई नदी,' वस्तुत:, नचिकेता के वर्ष 2002 और 2003 में लिखे 189 गीतों का, रचना-तिथि के क्रम में, संकलन है। 'रेत में खोई नदी' का शीर्षक भी प्रतीकात्मक है। लाखों देशभक्तों की बेशुमार कुर्बानियों से हासिल आजादी की अविरल बहती नदी जाति-धर्म-भाषा के विवाद में फँसी व्यवस्था, राजनीतिक अपराधीकरण और स्वार्थलोलुप अवसरवादिता की रेत में खोती जा रही है । नचिकेता के गीत इस मायावी जाल को केवल बेनकाब ही नहीं करते, प्रत्युत् इनके विरुद्ध संघर्ष का आह्वान भी करते हैं ।

इन गीतों में आज की लहूलुहान और कटी-फटी जीवन-वास्तविकताओं का दस्तावेज, भारतीय जनजीवन की विपन्नता के अत्यन्त ही मार्मिक चित्र, भूमण्डलीकृत विश्वबाजार की मायावी नृशंशता, उपभोक्तावादी संस्कृति की अमानवीयता और संवेदनहीनता के भयावह चित्र तो हैं ही, जिजीविषा की ओज से जगमगाते भविष्य की फूटती कोंपलें भी हैं । असल में, नचिकेता जटिल-से-जटिल और विषम-से-विषम परिस्थिति में भी पस्तहिम्मती को अपने पास नहीं फटकने देते । धूप में पाँव जलने पर उन्हें घर की याद नहीं आती, अपितु उनकी रीढ़ की अस्तियाँ तन जाती हैं। इसलिए नचिकेता के गीतों में अपने समय, समाज और इतिहास की जीवन्त धड़कनें हैं, प्रेम की ऊष्मा, प्राकृतिक परिवेश की ताजगी, ग्राम्य जीवन की सादगी, बनते-बिगड़ते पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों में सहज अपनेपन की तलाश तथा संघर्षशील मनुष्यों का जुझारूपन है । परिणामत: नचिकेता के ये गीत पाठकों को सिर्फ उद्वेलित और बेचैन ही नहीं करते, प्रेरित और ऊर्जस्वित् भी करते हैं ।

डॉ. यशोधरा राठौर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

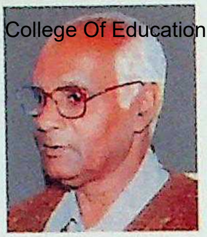

नचिकेता

जन्म : सावन-पूर्णिमा, 1945 (मथुरापुर केउर, जहानाबाद, बिहार)

शिक्षा : यांत्रिक अभियंत्रणा में स्नातकी।

कृतिया-आदमकद खबरें,सुलगते पसीने, पसीने के रिश्ते, लिक्खेंगे इतिहास, बाईस्कोप का गीत, सोये पलाश दहकेंगे, नचिकेता के भजन, रंग मैंले नहीं होंगे, कोई क्षमा नहीं, मकरचाँदनी का उजास, पर्दा अभी उठेगा, तासा बज रहा है, रंग न खोने दें, जेठ में मधुमास (सभी गीत-संग्रह), आइना दरका हुआ (गजल-संग्रह), गीत-रचना की नयी जमीन (आलोचना)। 'अंतराल', 'बीज', 'अलाव', 'परस्पर' 'आई. बी. पी. आह्वान' (अनियतकालीन पत्रिकाएँ), 'हरित वसुंधरा' का गीत अंक, 'पंख-पंख आसमान' (शांति सुमन के चुने हुए 101 गीत), 'शिनाख्त,' (जनगीतों का समीक्षात्मक अध्ययन), 'गीत वसुधा'-यंत्रस्थ (साठोत्तर नवगीतों का समवेत संकलन) का संपादन।

सम्प्रति : सेवा-निवृत्त यांत्रिक अभियंता, कृषि-कार्य एवं स्वतंत्र लेखन।

सम्पर्क : द्वारा-प्रेमचंद प्रसाद, पथ सं.-1, आजाद नगर, कंकड़बाग, पटना-800020.

दूरभाष-0612-2355478, मो.-9835260441, 9471050921.

सारांश प्रकाशन
दिल्ली-हैदराबाद

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant